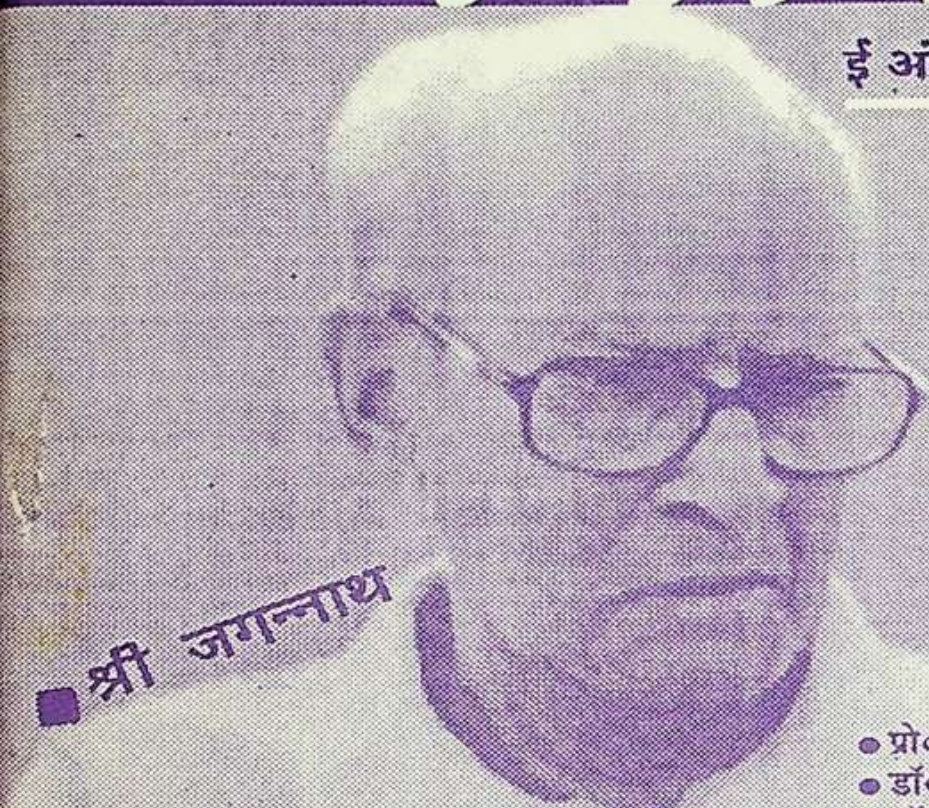
सम्मान-अंक

पञ्जाब

ई अंक : 100 रोपेया



■ श्री जगन्नाथ

- प्रो० हरिकिशोर पाण्डेय
- डॉ० शम्भुशरण सिन्हा
- डॉ० ब्रजभूषण मिश्र
- रामनिहाल गुंजन
- डॉ० शारदा पाण्डेय
- डॉ० महामाया प्र० विनोद
- डॉ० रामरक्षा मिश्र विमल
- रामेश्वर प्र० सिन्हा 'पीयूष'
- सतीश प्रसाद सिन्हा
- मिथिलेश गहमरी
- दिलीप कुमार

एह अंक के अतिथि संपादक :

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी

19 जनवरी, 1934

42

अक्टूबर–दिसम्बर, 2018

सम्पादक : डॉ. आसिफ रोहतासवी

गजल : जगन्नाथ



हँसावे के काबिल, रोवावे के काबिल
कहाँ पास बा कुछ सुनावे के काबिल.

उठावे के काबिल भले हम ना होखीं
मगर, यार, नइखीं गिरावे के काबिल.

मुखौटा लगवले सभे लोग बइठल
कहाँ केहू बा मुँह देखावे के काबिल.

ई मनलीं, बा भारी वजन जिन्दगी के
मगर बा सवख से उठावे के काबिल.

शहर में ही कूदे भा फाने के बा अब
कहाँ गाँव बा आजमावे के काबिल.

बहुत लोर आँखिन में बाटे अबहुँओ
मगर बा जे नइखे बहावे के काबिल.

(-'खुद के तलाशत' से, पृ.-23)



www.bhojpurisahityangan.com

संपादक
डॉ. आसिफ रोहतासवी
•
अतिथि संपादक
भगवती प्रसाद द्विवेदी
•
प्रबंध-सम्पादक
राजकिशोर
•
सह-संपादक
डॉ. पुष्पा कुमारी
•
उप-संपादक
उमा कुमारी
•
संपादकीय/व्यवस्थापकीय संपर्क
'परास', तेनुघाट साहित्य परिषद्
सिंचाई कॉलोनी
द्वारा-भावना मेडिकल हॉल
न्यू मार्केट, तेनुघाट-1
जिला- बोकारो-829 123 (झारखण्ड)
e-mail : sampadakaasif@gmail.com
•
संपर्क : 09334366001
समय : सबेर-साँझ : 6-9 बजे
•
सालाना : 60/- रोपेया
(विशेषांक के दाम अलग होई)
एह अंक के दाम 100/-रोपेया
•
संपादन-प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक अव्यावसायिक ।
•
पत्रिका में छपल विचारन से पत्रिका-परिवार के सहमति जरूरी नइखे । रचनाकार खुद जिम्मेवार बाड़न ।
•
वाद-स्थान : तेनुघाट न्यायालय ।

परास 42
(तेनुघाट साहित्य परिषद् के तिमाही भोजपुरी पत्रिका)
वर्ष-11, अंक-1 अक्टूबर-दिसंबर, 2018

श्री जगन्नाथ-विशेषांक

- **संपादकीय**
  आसिफ रोहतासवी/4
- **अतिथि संपादकीय**
  भगवती प्रसाद द्विवेदी/7

1. भोजपुरी ग़ज़ल : जनम से जवानी तक/ प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय/13
2. भोजपुरी आ कविवर जगन्नाथ/ डॉ. शम्भुशरण सिन्हा/17
3. ग़ज़ल के प्रवर्तक : ग़ज़ल-जस सोभाव/डॉ. ब्रजभूषण मिश्र/31
4. जगन्नाथ जी आ ग़ज़ल/ डॉ. शारदा पाण्डेय/36
5. गीतकार जगन्नाथ के गजलगोई/ रामनिहाल गुंजन/43
6. भोजपुरी ग़ज़ल के आधार स्तंभ/ डॉ. महामाया प्रसाद विनोद/49
7. हमरा आँखिन में/मिथिलेश गहमरी/52
8. भोजपुरी गीत-ग़ज़ल के व्याकरण/ सतीश प्रसाद सिन्हा/58
9. काव्याचार्य जगन्नाथ/ डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल/61
10. भोजपुरी साहित्य के अमिट हस्ताक्षर/ रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'/67

आमने-सामने

- जिनिगी के सुर में ग़ज़ल के सुर/ जगन्नाथ से दिलीप कुमार के बातचीत/71

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय..



रचनात्मक स्तरीयता के पर्याय रचनाकार

सन् 2003 में पटना विश्वविद्यालय ज्वाइन कइला पर पटना में रहेवोला जवना प्रमुख भोजपुरी-साहित्यकारन से हमार साक्षात्कार भइल, वोह में एगो जगन्नाथो जी बानीं । इहवाँ पाण्डेय कपिल (अब स्वर्गीय), भगवती प्रसाद द्विवेदी, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, तैयब हुसैन 'पीड़ित', कृष्णानंद 'कृष्ण' आ प्रो. ब्रजकिशोर के संग-साथ मिले के पहिलहीं से हम एह लोग के रचना-कर्म से परिचित रहीं । बाकिर, इहवाँ अइला पर एह लोग के साथ-संगत से हमरा रचनाकार-व्यक्तित्व पर बहुते सार्थक आ सकारात्मक असर परल । ओही समय पाण्डेय कपिल जी से तिमाही 'कविता' के जानकारी मिलल, जेकर संपादन जगन्नाथ जी करत रहीं । उहाँ से करीबी त भइबे, कइल, 'कविता' में हमार रचनो जाए लगली स ।

ई सोरह साल के लगाव-सान्निध्य जगन्नाथ जी के समुझे-बूझे में हमरा बहुत काम आइल । उनकर 'लर मोतिन के' प्रकाशन-वर्ष 1977 में हम मात्र इन्टरमीडिएट के विद्यार्थी रहीं आ ग़ज़ल के क ख ग से अनजान । सन् 1983-84 के लगभग जब एह काव्य-रूप में रुचि जागल, तबो ले भोजपुरी-गजल से अनजाने रहीं । सन् 1990 के आस-पास भोजपुरी-गजल का ओर झुकाव भइला पर जवन पहिला नाँव जनलीं, ऊ रहे श्री जगन्नाथ । छिटपुट रूप से पढ़ल गजलन से उनकर गजलगोई के अन्दाज से परिचित होखे लगलीं ।

सन् 1895 में रामकृष्ण वर्मा द्वारा भारत जीवन प्रेस (बनारस) से तेग अली 'तेग' के पहिला आ एकमात्र संग्रह **'बदमास दर्पण'** के प्रकाशन के लगभग 83 साल बाद **'लर मोतिन के'** के प्रकाशन के

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी-गजल के परम्परा में बहुते महातिम बा । दरअसल, आधुनिक भोजपुरी-गजल के शुरुआत जगन्नाथे जी से होत बा । तेग अली आ जगन्नाथ के बीच के लमहर अन्तराल में परम्परा में ठहराव भा कहीं कि शून्यता रहल बा । पटना अइला पर **'लर मोतिन के'** के संगही **'गजल के शिल्प-विधान'**, **'भोजपुरी-गजल के विकास-यात्रा'** आ **'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरुप छन्द'** ग्रन्थन के पढ़ला-गुनला का बाद उहाँ का बारे में हमार आपन समुझ बनल बा ।

'लर मोतिन के' के 38 साल बाद सन् 2015 में इहाँ के दुसरका गजल-संग्रह **'खुद के तलाशत'** आइल । एकर पैंसठ में से चालीस-पैंतालिस गो गजल सन् 1977 से 1990 के बीच के 13 साल में रचाइल बाड़ी स ('आपन बात' में जगन्नाथ जी के कहनाँव) । एकर मतलब कि सन् 2015 तक के अगिला पचीस बरिस में मात्र 20 गो गजल लिखइली स । मतलब ईहो निकालल जाय कि जगन्नाथ जी में लिखास-छपास के 'हाही' ना रहे । बीच के एह अवधि में दू-चार गो उपरोक्त किताबो लिखइली स । ईहे कारन बा कि गजल उहाँका संख्या में लिखलीं त कमे, बाकिर स्तरीयता संगे कवनो समझउता ना कइलीं । उहाँके ई गुन आज के बेताब आ शॉर्टकट राह अपनावे वाला रचनाकारन खातिर सीखे जुगुत बा ।

एह रचनाधर्मिता के समानान्तर तमाम तरह के पारिवारिक-सामाजिक दायित्वन के निबाहत, उतार-चढ़ाव, रोग-शोक-दु:ख झेलत, एहनी से टूटत-दरकचात आ फिर अपना के सम्हारत गर्दनीबाग में किराया के एगो छोटहन फ्लैट में अपना के समेटले एह साहित्य-साधक के साधल गुम्मी हमरा मन-चेतना के बेर-बेर उदबेगेला ।

श्री जगन्नाथ के सम्मान में 'परास' के ई विशेष अंक निकाले के प्रेरणा बहुत कुछ एही बिन्दुअन आ परिस्थितियन में लुकाइल बा । एह विचार आ जोजना के अमली जामा पहिरावे के हमरा निहोरा के तुरन्ते गछ के भगवती बाबू बड़ी किरपा कइले बानी । एह खातिर हम उहाँके आभारी बानी । चूँकि उहाँका व्यक्तिगत रूप से आ लेखन-संपादनो के काम में लमहर समय ले जगन्नाथ जी के सबसे करीबी आ सहभागी

www.bhojpurisahityangan.com

रहल बानी, एह से एह अंक के संयोजन-संपादन खातिर उहाँ से अधिका सुपात्र आउर के हो सकत रहे !

हम एह अंक के सहभागी, सहयात्री वोह कुल्हि विद्वान् अध्येता-लेखको लोग के आपन विनम्र प्रणाम निवेदित कर रहल बानी, जे एह साहित्य-साधक के व्यक्तित्व-कृतित्व आ साधना के मूल्यांकन में आपन प्रज्ञा आ वेशकीमती समय 'परास' के दान कइले बानी सभे । 'परास' खातिर रउरा सभे के अइसने नेह-छोह आगेहूँ बनल रहो— ईहे कामना बा ।

—आसिफ रोहतासवी

❖❖❖

गजल

आजु उनकर खियाल आइल बा
बिन बोलवले बवाल आइल बा

जिन्दगी पड़ गइलि हिस्सा अनका
हमरा बखरा जवाल आइल बा

हाल पुछलीं अनेर उनका से
जवाब में सवाल आइल बा

नेह मँगलीं त लोग हँसिके कहल
आज कइसन कंगाल आइल बा

-'लर मोतिन के', पृ.-20

www.bhojpurisahityangan.com

अतिथि संपादकीय



सेसर सृजनशील कर्मयोगी

-भगवती प्रसाद द्विवेदी

कविवर जगन्नाथ भोजपुरी-ग़ज़ल के हलका में इतिहास रचेवाला एगो अइसन गौरव-स्तम्भ के नाँव ह, जेकरा बेगर ना त भोजपुरी-ग़ज़ल के चरचा कइल जा सकेला, ना ओकर इतिहासे लिखल जा सकेला । खाली अतने ले ना, भोजपुरी के कई नामी-गिरामी ग़ज़लगो के एकल संग्रहन के व्याकरणिक दोष दूर करे आ उन्हनीं के संशोधित-परिमार्जित कऽके खास बनावे के श्रेय उहें के सलाहियत के जात बा । एकरा सँगहीं, ग़ज़ल के शास्त्रीयता, छंद-विन्यास आ विधागत विकास-यात्रा पर प्रकाशित उहाँ के प्रामाणिक समालोचनात्मक पुस्तक ग़ज़ल लिखेवालन आउर भोजपुरी-ग़ज़ल पर शोध करेवालन— दूनों खातिर निहायत जरूरी बाड़ी स ।

जगन्नाथ जी के सिरिजनशील व्यक्तित्व बहुआयामी रहल बा आ गीत, ग़ज़ल, समालोचना-शोध का सँगहीं कहानी आउर नाटक में उहाँ के विशेष सृजनात्मक अवदान रेघरियावे-जोग रहल बा । 1966 से लेके 1978 का बीचे उहाँ के कहानी 'भोजपुरी कहानियाँ' आ 'भोजपुरी कथा-कहानी' में छपत रहली स, जिन्हनीं में गाँव के ऊबड़-खाबड़ जमीन पर आदर्शोन्मुख जथारथ के बिनावट आ सकारात्मक सोच मरम के बेधे बेगर नइखे रहत । ओह कहानियन के संग्रह 2009 में 'बाँचल-खुचल' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे । अइसहीं, सात रंग के छोट-छोट एकांकी नाटकन के संग्रह 'सात रंग' 2010 में छपिके चर्चित भइल रहे । हँसिए-हँसी में गम्हीर घाव करेवाला सातो एकांकी चोट-कचोट से लैस बाड़न स । भोजपुरी-कविता के एकलउती मानक पत्रिका 'कविता (तिमाही) के यादगार सम्पादन-प्रकाशन कऽ के उहाँ के एगो आउर मील के पाथर गाड़े में कामयाबी हासिल कइले रहलीं । सन् 1999 से 2012 ले लगातार प्रकाशित ओह पत्रिका के हरेक अंक संग्रहणीय आ ऐतिहासिक महत्व के होत रहे । साहित्यिक पत्रकारिता खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

उहाँ के ई समरपन कबो ना भुलाइल जा सके ।

बाकिर, एह सबके बावजूद जगन्नाथ जी मूलतः कवि हईं आ उहाँ के साफ-साफ मानींले जे कविता मानवीय संवेदना के लयात्मक अभिव्यक्ति ह । अपना आत्मकथ में उहाँ के कहलहूँ रहलीं- 'लिखला से हमरा सुकून मिलेला । हमरा रचनन में जीवन के विभिन्न पक्षन से जुड़े के प्रयास होला, बाकिर कवनो खास पक्ष के लेके आग्रह ना होला ।'

जगन्नाथ जी के गीतन के पहिलका संग्रह 'पाँख सतरंगी' 1967 में प्रकाशित भइल रहे, जवना में कुदरत के जियतार छटा देखते बनेला । एक तरफ बिछुड़न के टीस, उहँवें दोसरा ओर संघर्षशीलता के अविराम सफर । लोकधुनन में आधुनिक संदर्भन के अभिव्यक्त करत गीतकार कबो 'भरि जाला अँखिया सपनवाँ हो रामा, चइत महिनवाँ' जइसन चइता गीत के सिरिजना करत बा, त कबो 'जनम-जनम के आस कबे मन के बुति गइल रहित निरमोही/ छनभर एको बेर कबो जे साँसन के दुलरवले रहितऽ' नियर भावप्रवण गीतन के । कवि मन के दियना बारे के आवाहन करत कहत बा- 'थाके राह भले, ना थाके मन के भरल हियाव कबो रे / आवे माया में किनार के ना जिनिगी के नाव कबो रे / लहर-लहर के ताल-ताल पर नाचत चले बहार रे / मंजिल अबहीं दूर बटोही, मन के दियना बार रे !'

हालाँकि 'पाँख सतरंगी' में दूगो ग़ज़लो संग्रहीत रहली स, बाकिर 1977 में जब जगन्नाथ जी के पैंतीस गो ग़ज़लन के मोतिन के लर 'लर मोतिन के' शीर्षक से प्रकाशित भइल, त ऊ भोजपुरी ग़ज़ल-लेखन के दिसाईं 'टर्निंग प्वाइंट' साबित भइल । ओइसे त, भारतेन्दु युग के तेगअली 'तेग' के इश्किया शायरी से भोजपुरी ग़ज़ल के शुरुआत उनइसवीं सदी के आखिरी चरन में हो गइल रहे, जब सन् 1895 में उन्हुका तेइस ग़ज़लन के संग्रह 'बदमाश दर्पण' के भोजपुरी ग़ज़ल के पहिल एकल संग्रह होखे के गौरव मिलल रहे, बाकिर साँच कहल जाउ त आधुनिक हिन्दी-भोजपुरी ग़ज़ल के उत्कर्षकाल 1976 से शुरू होत बा, जब दुष्यन्त कुमार के समय-संदर्भ आ आजकाल्ह के जरत-बरत जमीनी हकीकत से जुड़ल ग़ज़ल तहलका मचवली स आ उहँवें से ग़ज़ल-लेखन में एगो अइसन मोड़ आइल, जवन ग़ज़ल के दिसा बदलि दिहलस आ तेवर आउर तल्खी का सँगे ग़ज़ल कहे के नया परिपाटी शुरू भइल । तब आधुनिक ग़ज़ल अपना के लौकिक प्रणये ले सीमित ना रखलस । एकरा दायरा के फइलाव इश्केमजाजी आ इश्केहकीकी

www.bhojpurisahityangan.com

से लेके तमाम सामाजिक विसंगति-विद्रूपता ले होत चलि गइल, जवन जनजीवन से एकर गहिर जुड़ाव आ दृष्टि-सम्पन्नता के सूचक बा । ओकरे नतीजा रहे- 1978 में जगन्नाथ जी के सम्पादन में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि ग़ज़ल' के प्रकाशन । तबहूँ ई कमी शिद्दत से महसूसल जात रहे कि भोजपुरी ग़ज़ल के एगो अइसन संकलन आवे, जवना में हर पीढ़ी के प्रतिनिधि ग़ज़लगो अपना चुनिंदा रचनन का साथे शामिल होखसु आ ओह ग़ज़लन के जरिए सुधी समालोचक आ शोधकर्त्ता हरेक रचनिहार के मूल्यांकन का सँगही समकालीन भोजपुरी ग़ज़ल के दसा-दिसा निर्धारित करि सकसु । एकर भरपाई भइल 2003 में जगन्नाथ जी आ एह पाँती के लेखक के सम्पादकत्व में 151 ग़ज़लन के गुलदस्ता 'समय के राग' के प्रकाशन से, जवना में सोरह प्रतिनिधि ग़ज़लकारन के चुनिंदा ग़ज़लन के संकलन मूल्यांकनपरक आलेख का साथे छपल रहे । नवकी से लेके वरिष्ठतम पीढ़ी तक के ग़ज़लगो के प्रतिनिधित्व आ भोजपुरी ग़ज़ल के उठान आउर बढ़न्ती में ओह सबके अवदान रेघरियावल गइल रहे । हर पीढ़ी के मौजूदगी आ हर रंग के ग़ज़ल एकर अतिरिक्त खासियत रहे ।

एकरा पहिले 1997 में ग़ज़लगो जगन्नाथ के कलम से ग़ज़ल लिखे आ शोध करेवालन खातिर ग़ज़ल के शास्त्रीयता पर केन्द्रित किताब 'ग़ज़ल के शिल्प-विधान' के रचना भइल रहे आ ओही साल भोजपुरी ग़ज़ल-लेखन के इतिहास 'भोजपुरी ग़ज़ल के विकास-यात्रा' शीर्षक से लिखाइल रहे । एही क्रम में 1999 में छपल उहाँ के एगो अउर किताब 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' भोजपुरी छंदशास्त्र खातिर एगो अनमोल देन बा, जवना में हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के छंदन में अचरज-भरल समानता के ना खाली तार्किक ढंग से विवेचन-विश्लेषण कइल गइल बा, बलुक अइसन चौसठ छंदन के तीनों भाषा के उदाहरणो दिहल गइल बा ।

'खुद के तलाशत' बेयासी बरिस के उमिर में आदरणीय जगन्नाथ जी के समकालीन ग़ज़लन के दोसर संग्रह रहे, जवना के जद में रहे एह लोकतांत्रिक देस के नियंता जन-गण के नियति आ रोज-रोज के जिए-मूवे के बेबसी । जिनिगी के जद्दोज़हद ग़ज़लगो जगन्नाथ के ग़ज़लन के कथ के स्थायी भाव रहल बा । इन्हनीं में तरल रागात्मकता बा, त आँतर के ताकत देबेवाली दनाउर आगियो बा । प्रयोगधर्मिता उहाँ के ग़ज़लन के बनल-बनावल लीखि से अलगावेले आ मुहावरा-लोकोक्तियन के सुघर इस्तेमाल रचना के

www.bhojpurisahityangan.com

जियतार बना देले । 'पानी' वाली ग़ज़ल के त हरेक शे'र में एगो चटख मुहावरा सलीका से मोती मतिन गुँथाइल बा- **'जिन्दगी का निसा चढ़ल बाटे/उम्र के बा उतर गइल पानी/ खुद के ऐनक में देख के लागल / जइसे घइलन बा पर गइल पानी / कइसे ऊ शख्स अबो जिन्दा बा / जेकरा आँखिन के मर गइल पानी....!'**

भोजपुरी मिजाज आ बिम्ब-प्रतीकन के अनुछअल इस्तेमाल उहाँ के ग़ज़लन के खूबी में चार चान लगा देत बा । **'नेह के झिंटिकी'** गिरते **'मन के कुआँना में लहरे-लहर'** हो जाएवाला दृश्य आ दरद पाके ग़ज़ल देबे आ रउरा नाँवें 'बयाना' करेके वादा जगन्नाथे जी जइसन समरथी ग़ज़लगो के बूता के बा । कवि के आस्था बा- **'जिन्दगी भर जरे-मरे के बा / मेघ-अस रात-दिन झरे के बा ।'**

शहरो से अधिका बनावटी, सवारथी आ सियासी दाँव-पेंच के पर्याय बनल आधुनिक गाँव से जगन्नाथ जी भलहीं विमुख हो गइल होखीं, बाकिर उहाँ के आँतर के एगो कोना-अँतरा में गाँव आजुओ जिन्दा बा, जवन कवि-मन के कचोटत-घवाहिल करत आ रहल बा । तबे नू ग़ज़लन के अशआर गाहे-बगाहे गँवई संदर्भ से जुड़िके गहिर संवेदना जगावत बाड़न स । किछु बानगी देखीं- **'गाँव बा, एगो असरा रहल हऽ मगर / अब त सुनलीं ह, ऊहो शहर हो गइल', 'गाँव के छोड़ के शहर भगलीं / हमरा लेखा गँवार के होई !', 'पता ना, बा बाँचल कि ना हमरा गाँवें/ ई राउर शहर हऽ, शराफत त होई !', 'गाँव के खोज में गइलीं त मिलल गायब ऊ / फेरु शहरे में ना अइतीं, त अउर का करितीं !', 'आँख में बा शहर, गाँव बा प्रान में / बानीं अह-जह में, अबहीं विचारे त दीं !', 'लाख चहलो प बसलीं ना हम गाँव में / गाँव हमरा में, बाकिर, बसल रह गइल'....** ।

बाजारवादी सोच में तार-तार होत नेह-नाता, सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-नैतिक मूल्यन के पतनशीलता आ लोप होत मनुजता पर रचाइल एक से बढ़िके एक शे'र एह संग्रह के बेशकीमती बनावत बाड़न स- **'खोज इंसानियत के जारी बा / खनतलासी अबे लियाइल ह', 'काट जो ली, त ना लहर आई / आदमी जात हऽ, चिहाईं जनि', 'बा नजर भले रउवा / पास ना नजरिया बा', 'जिअल बाटे मुश्किल, मरल बाटे मुश्किल / पता ना ई कइसन पहर हो गइल बा', 'हाथ से हाथ मिल**

www.bhojpurisahityangan.com

जा, इहे बा बहुत / दिल से दिल के मिले के चलन उठ गइल'..... ।

कविता के मौजूदा सेहतो पर कवि फिकिरमंद बा- **'गूँग शब्दन के कविता भइल संकलन / व्यंजना के बुला अपहरन हो गइल ।'** एह दिसाईं ग़ज़लगो के सलाहियतो गौरतलब बा- **'बात अइसन लिखीं कि वक्त कहे / शायरी बेजबान तक पहुँचल ।'**

कवि कतई निराश नइखे, काहेंकि ओकरा भीतर के आल्हर रचनिहार के जिजीविषा बरकरार बिया । कविता के इहे भूमिका होइबो करेला । कवि के कहनाम बा- **'रोशनी बा, भले बेमरिहा बा / ई नया प्रात हऽ, चिहाईं जनि !', 'जिन्दगी लाख बुढ़ाइल, बाकिर / साध-सपना त अबहूँ आल्हर बा', 'ऊ त जी-जी के ना मरे जनलन / हमरा मर-मर के जिए आइल बा'.....।**

भाव-भाषा के स्तर पर जगन्नाथ जी के शीर्षस्थ ग़ज़लगो मानत प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय जी 'झकोर' के ग़ज़ल विशेषांक (जून-सितंबर, 1981) में लिखले रहलीं- 'हमरा समझ से भोजपुरी-गजल में सबसे बड़ नाम बा- जगन्नाथ । भोजपुरी-गजल के अपना जगन्नाथ पर गर्व होखे के चाहीं । जगन्नाथ भाव-भाषा दूनों में गजल के मिजाज जइसे समझले बाड़न, ओइसहीं कवनो भोजपुरी-गजल लिखनिहार के समझे के चाहीं । गजल में कथ्य के गहराई ओकर दबगर भइल ना ह, महीन भइल ह, कोमल-सूक्ष्म भइल ह । औरत के मन जब एह दशा के भोगेला, त ऊ फेर में पड़ जाले; ओठ कुछ बुदबुदाला, शब्द आके थथमे लागेला, आँख मछरी बन जाले, गाल लाल हो जाला, गर्दन झुक जाला, धड़कन बढ़ जाला, ओकरा कथ्य तक जाए के ईहे व्याकरण ह , ईहे भाषा ह- **'तनिकी हवा में नेह के अतना जे हिल गइल/ मन ना भइल ई हो गइल पीपर के बुला पात । (जगन्नाथ)'** ।

चाहे छोट बहर के ग़ज़ल होखो भा बड़ बहर के, दोहा छंद में रचाइल होखो भा दोसर कवनो रूप में, जगन्नाथ जी अपना ग़ज़लन के बेरि-बेरि माँजींले, तरासींले आ नया-नया चमक, आभा आउर असर पैदा करत रहींले । एही से 'लर मोतिन के' के किछु शे'र कथ-शिल्प-संवेदना का स्तर पर अउर बेहतर छाप छोड़त दोसरका संग्रह में मौजूद बाड़न स । उहाँ के कहलहूँ बानीं- **'तलासत रहीला अपना के / लोगन का नजर में / तरासत रहीला अपना के / अपना नजर से ।'** ई तलाश आ तराश सिरिफ रचने के ना, बलुक इंसानो के उम्दा आ मुकम्मल बनावेला । ग़ज़लगो के एह

www.bhojpurisahityangan.com

शे'र का ओर तनी अखियान करीं- **'बहुत देखलीं रउवा उनका के अब तक / तनी खुद में खुद के तलाशत त देखीं !'**

मानवीय मूल्यन से कबो ना डिगेवाला एह शीर्ष ग़ज़लगो, सेसर सृजनशील कर्मयोगी के शतकीय जिनिगी के कामना करत हमार सादर नमन !

नामचीन ग़ज़लगो-गीतकार भाई आसिफ रोहतासवी जी से एक दिन जब बतकही होत रहे, त बाते-बात में ई बात आइल कि 'परास' के एगो मुकम्मल अंक आदरणीय जगन्नाथ जी पर छापल जाउ, जवना में उहाँ के रचनाशीलता के तमाम आयामन पर चरचा होखे आ मूल्यांकन के दिसाईं एगो जरूरी पहल कइल जा सके । आसिफ जी सहर्ष रजामंदी जतावत अतिथि संपादन के जिम्मा हमरे के दे दिहनीं । रचनिहार लोग के दरियादिली आ रचनात्मक सहजोग खातिर हम दिल से आभारी बानीं । किछु अइसनो लोग बा, जे अपना आ अपना परिवार का अलावा अउर केहू के रचनाकार मनबे ना करे । अइसना विभूतियन के बात के अमनख का माने के बा ! हम रोहतासवी जी के धन्यवाद देत बानीं आ उमेद करत बानीं कि 'परास' के एह सकारात्मक सोच आउर रचनात्मक उतजोग के स्वागत होई ।

रउआँ सभ के अनमोल विचार जाने के लालसा बा ।

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर,
पटन-800001 (बिहार)
चलभाष : 9430600958, 9304693031
ईमेल : dubeybhagwati 123@gmail.com

❖❖❖

एह अंक में चूँकि **'जोहार माटी'** स्तम्भ रोकल गइल बा, एह से पहिले से सूचित विषय **'संताली में अनुवाद-साहित्य के स्थिति'** अब अगिला अंक में पढ़ल जाय । -संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी गज़ल : जनम से जवानी तक

-प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय

मृदंग दू आधा होके तबला बनल, ई कहला से जइसे तबला के पहचान ना हो सके, ओइसहीं फारसी के एगो काव्य-रूप तशबीब, गुरेज आ कसीदा से कट के ग़ज़ल हो गइल, ई कहला से ग़ज़ल के सही पहचान ना हो सके । सवाल ई बा कि ग़ज़ल के आपन पहचान का ह, आ भोजपुरी ग़ज़ल ओह कसउटी पर कसा के का रंग देता ?

भोजपुरी-ग़ज़ल लिखे के प्रेरणा सीधे हिन्दी ग़ज़ल से मिलल । भोजपुरी के कवि लोग हिन्दिओ के कवि भइला का वजह से ग़ज़ल लिखे के शुरू कइलस । दुष्यन्त कुमार के तूती बोलल, त सभका लालच भइल । हिन्दी ग़ज़ल के सामना जब उर्दू ग़ज़ल से भइल त आलोचक लोग के दू गो दल हो गइल । उर्दू हिन्दी-ग़ज़ल पर मुँह बिजुकावे लागल त हिन्दी भारतेन्दु के ठेंगनी ध के गोहरावे लागल । दूनो अपना-अपना भाषा के लंगोटा बान्ह के अखाड़ा में उतर गइल । अखाड़ा में चित-पट, तोर-मोर होला, बाकिर साहित्य में ना होय ।

भाषा का फरक से कविता मर जाई, एकरा के हम झूठ मानत बानीं । फारसी-ग़ज़ल अगर उर्दू-ग़ज़ल हो सकेले, त ऊ हिन्दी आ भोजपुरी ग़ज़ल भी हो सकेले । असल बात ई बा कि ऊ ग़ज़ल के पहचान का शर्त्त पर होय । शर्त्त का हो सकेला ? एगो त ओकर छन्द (बहर) योजना । दूसर, एकर भाव-भाषा के आपन मिजाज़ । हमरा समझ से पहिलका का मेह से बन्हाइल कवि जे भी लिख दी, ओह में ओकरा भाव के धाही मिल जाई, ई झूठ बा ।

हिन्दी ग़ज़ल के उर्दू ग़ज़ल से अलग देखावे का जोम में कुछ लोग कहे लागल कि हिन्दी ग़ज़ल उर्दू ग़ज़ल का दरबारीपन से घरबारीपन का ओर आ गइल बा । उर्दू ग़ज़ल औपचारिक बा, हिन्दी ग़ज़ल अनौपचारिक । बतकही खाली विषय पर भइल, मगर ईहो गलत । 'जोश' आ 'फैज़' में त विषय साम्यवाद से गाँव के पनघट ले गइल बा त इहाँ घरबारीपन नइखे ?

हमरा समझ से ग़ज़ल के सुभाव समझे खातिर ओकरा परिभाषा के डेढ़वार ना करे के चाहीं । 'सुखन अज ज़नान गुफ्तन' चाहे 'कांतासम्मित तदुपदेश युजे' में कांता सम्मित आ ज़नान गुफ्तने पर ज़ोर देवे के चाहीं । एकर मतलब ई नइखे कि चवर्ग, पवर्ग आ तवर्ग के शब्दन के उच्चारण के

www.bhojpurisahityangan.com

मिठास आ उपरवार सादगी ग़ज़ल के मिजाज़ पकड़ ली । सपाटबयानी 'साफगोई' ना ह । शब्दन के अनुभूति का नि:शब्दता तक पहुँचावे के ताकत पावे के होई । एह हिसाब से कविता चाहे ग़ज़ल एगो सांस्कृतिक कर्म ह । नि:शब्दता से हमार मतलब आदमी का लाज-शील से बा । एकरे प्रतीक का रूप में 'कांता' चाहे 'ज़नान' शब्दन के इस्तेमाल भइल बा । अइसन औरत के दिल में अगर चोट लागी, त ओकर अभिव्यक्ति का होई ? ओकर मूड़ी झुक जाई, आँख लोराई, गाल लाल हो जाई । ओकरा अनुभूति (विषय) तक जाये के इहे व्याकरण होई । अगर ओकरा खुशी होई, त ऊ घूघ में बच्चा लेखा खिलखिलाई, कूद के चाहे छउकत ठहाका ना लगाई । ओकरा अभिव्यक्ति के इहे 'सादगी' होई । एह बात के कविवर जगन्नाथ से ज्यादे नीमन ढंग से हम नइखीं कह सकत । उहाँ के दू गो लाइन देखल जाव-

तरस खाईं अनेरे जनि निरखि हमरा के अकसरुआ ।
ई का कम बा कि हम बानी आ जवरे ज़िन्दगानी बा ॥

कवि जवना चीज के मनाही करत बाड़न, पढ़निहार पर ठीक उलटा असर होता । जेकरा देह हइये नइखे ओह भाववाचक जिन्दगानी के साथी बनाके अकसरुआपन दूर कइला के मजबूरी से पढ़निहार के आँख लोराई कि ना !

भोजपुरी में लिखात कुछ ग़ज़लन के पढ़ के भोजपुरी के भाग सराहे के पड़ी । कुछ लोग बा, जे ग़ज़ल के मिजाज समझ के लिख रहल बा । हमरा समझ से भोजपुरी में सबसे लमहर नाम बा- जगन्नाथ । भोजपुरी ग़ज़ल का अपना जगन्नाथ पर गर्व होखे के चाहीं । जगन्नाथ बाबू भाव-भाषा दूनों में ग़ज़ल के मिजाज जइसे समझले बानी, ऊ बेजोड़ बुझाता । अनुभूति के सोरहो आना प्रकट करे में शब्द का लाचारी होला । अगर शब्दन के चुनाव आ बइठाव अइसन होय कि ऊ ओह ताकत से अनुभूति का नि:शब्दता तक जादे से ज्यादे पहुँचे, त इहे ओकर मोल होई । एही से ग़ज़ल अपना लाज-शील के संस्कार का वजह से फटहा अभिव्यक्ति ना बन सके । ई शब्दन के हहुआ के ना हँसोते, ना ओकनी के कोशीय अर्थ पर भरोसा करेले । ई अलंकारन के बोझा ना बान्हे, ऊ एकरा मुनरी में नगीना लेखा आवे त आवे ।

ग़ज़ल के अनुभूति के हम संस्कार के लाज-शील से काहे जोड़ले बानी, आ शब्द के लाचारी का बा, एकरा खातिर एगो उदाहरण देवे के चाहत

www.bhojpurisahityangan.com

बानी । वनवास में भगवान जब गँवई राह से गुज़रत रहीं, त रूप देख के गाँव के मेहरारू चिहात सीताजी से पुछली स- '....कहु साँवरे सो सखि रावरे को हैं ?' अब समस्या सीतेजी खातिर ना रहे, लमहर समस्या कवि तुलसी का सामने रहे । उनकर प्रतिभा देखीं; ऊ कुछ ना कहलन आ सबकुछ कह देलन: 'तिरछे करि नैन दे सैन तिन्हे समुझाई कछू मुसकाइ चली ।' सब मेहरारू बूझ गइली स, कवनो विदेशी औरत का एकर अर्थे ना बुझाई । एही से अंग्रेज कवि-आलोचक ईलियट कहलन कि कविता समझल शब्दन के व्याकरणिक परीक्षा ना ह, ओकरा भाव के आनन्द तक पहुँचल ह ।

एही नज़र से हम जगन्नाथ बाबू के कुछ लाइनन के देखे के कोशिश कइल चाहत बानी । ग़ज़ल के दू गो गुन, किनाया आ मुहावराबन्दी, ओकरे असर देखावे के चाहब ।

लोर पीये के जनमे से लागल लकम ।
अब ना छूटी निसा ई पुराना भइल ॥

एह लाइनन के असर के चाभी बा 'निसा' । निसा काहे खातिर कइल जाला ? मातहीं खातिर नू । दु:ख के शराब मस्ती होके सहाउर होइबे करी । 'दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना' । मगर पढ़निहार के आँख त ओकरा मज़बूरी पर लोराइये जाई । व्यंजना शक्ति के सुंदरता कइसन बा ! एही धाह के दू लाइन मलका जान से लेके एकरा के साबित कइल चाहब । उनकर लाइन हई स-

अश्कों से ताजा रखते हैं दागों का गुलिस्ताँ ।
मोहताज हम कभी नहीं अब्रे-बहार के ॥

अगर एकर भोजपुरी रूप दिआव त हमरा समझ से अइसे होई-

लोरवा से हरियर राखीले दुखवा के ई फुलवारी ।
कबहीं ना जोहलीं मुँह हम वसंत का बादर के ॥

हमरा रोअला के अर्थ लागल ह ।
हमरा आँखिन के गिर गइल पानी ॥

रोअला से पानिये नू गिरेला । मगर ई दु:ख के पघिलल ह । दोसरकी लाइन के आँख के पानी गिरल त मुहावरा ह, जेकर अर्थ ह बेशरम भइल । बताईं लोग कि अइसन निगाह कवि के लोर आउर बढ़ाई कि ना ! कठकरेजी का लोर के कीमत कहाँ बुझाला !

रोज एही तरे त गरजे ले
गाँव के रात ह चिहाईं जनि

www.bhojpurisahityangan.com

'गाँव के रात' आ 'चिहाईं जनि' एह शेर का पोखरा में दू गो ढेला लेखा गिरल बा । ओकरा अर्थ के इशारा वृत्त में बढ़त पोखरा के परिधि छू लेता । संकेतार्थ के ई धन कवि का बहुते मिलल बा । गाँव के रात मतलब सादगी, गरीबी आ असुरक्षा के अन्हरिया । 'चिहाईं जनि' से मतलब ओह शहरू पर कवि के हलुक तंज बा, जवना का ओइसन जीवन के अनुभवे नइखे । 'चिहाईं जनि' जइसन शब्दने खातिर हम नि:शब्दता के संस्कार से जोड़ले बानी ।

हिल सकल ना समय के आन्ही में
प्रान के पात ह, चिहाईं जनि

आन्ही के ताकत आ पत्ता के कमज़ोरी सभे जानत बा । मगर एकर विरोध 'प्रान' करत बा । ऊ मामूली पतई ना ह, बड़ा वजनी चीज़ ह । काहे ? कवि के इशारा बा ओकरा गुन के- धीरज, ज्ञान, साहस, चरित्र के मजबूत जड़ । अइसन मजबूत जड़ के आन्ही, ऊ कतनो बिगड़ल समय में आवे, ओकर कुछ ना बिगाड़ी ।

गिरल जात भुइयाँ बा आँखिन से लोर
कहाँ उनका रोये के बड़ुए सहूर

कवि के अर्थ तक पहुँचेवाला शब्द बा 'भुइयाँ' । भुइयाँ मानी माटी में मिलल, इज्ज़त मिटल । रोयेवाला का अगर सहूर नइखे त हँसे के जगह कहनिहार का पाले एगो रूमालो नइखे ? ऊ त इहो नइखन जानत कि दुख ज्यादा ना होई त अतना लोरो ना गिरी । अइसने विरोधाभासी (पाराडॉक्सिकल) लाइनन के काव्यात्मक प्रयोग से कवि पाठक के मानवीय संवेदना से छूअत बा । कवि आखिर का कह सकेलन एकरा अलावे कि-

अदा इश्किया ना भले रह गइल बा
ग़ज़ल ह त आखिर नज़ाकत त होई

-आदर्श कालोनी, श्यामचक, छपरा

❖❖❖

अंक पर आपन बेलाग प्रतिक्रिया दिहल जाय ।

-संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी आ कविवर जगन्नाथ

-डॉ. शम्भुशरण सिन्हा

बात 1951 ई. के ह । महीना जुलाई, तारीख 16 आ दिन सोमवार । जगन्नाथ जी के हम सहपाठी हो गइलीं । जगन्नाथ जी जतने अंतर्मुखी, हम ओतने बहिर्मुखी । बाकिर सुग्गा कबले चुप रही । ओही दिन पता चल गइल कि जगन्नाथ जी में कविता-कीट भारी संख्या में कुलबुलात बाड़न स । हम आ हमनी के एगो आउर कवि मित्र स्व० प्रो. रवीन्द्र किशोर- दूनों आदमी रोजे जगन्नाथ जी के मधुर कण्ठ से उनकर गीत सुनीं- कभी राजी-खुशी से त कभी धकिया के । मन ना अघात रहे । तब के अनुमान कइले रहे कि जगन्नाथ मंच कवि से आचार्य के ऊँचाई छू लीहें ! बाकिर ई ऊ सचाई बा, जवना के खारिज ना कइल जा सके । एकरा खातिर उनकर सम्पूर्ण भोजपुरी साहित्य-साधना के सिलसिलेवार देखे के होई :

कविता-संग्रह : 1. पाँख सतरंगी (प्रथम संस्करण 1967 ई.), (कुल 56 भोजपुरी कविता जवना में दू ग़ज़ल, एक रुबाई, एक सॉनेट आ शेष बावन गीत बाड़न स ।) एकर द्वितीय संस्करण 1989 में छपल ।

2. लर मोतिन के (35 ग़ज़लन के संग्रह) प्रथम संस्करण 1977 ई.

3. खुद के तलाशत (पैंसठ ग़ज़लन के संग्रह) प्रथम संस्करण 2015 ई.

सम्पादन : 1. भोजपुरी के प्रतिनिधि ग़ज़ल 1978 ई., 2. समय के राग प्रतिनिधि ग़ज़ल 2003 ई., 3. कविता भोजपुरी त्रैमासिक पत्रिका (जुलाई 99 से अप्रिल 12 तक निकलल) ।

कहानी-संग्रह : बाँचल-खुचल, 2009 ई.

एकांकी-संग्रह : सात रंग, 2010 ई.

इतिहास : भोजपुरी ग़ज़ल के विकास-यात्रा

इल्मुल उरुज़ (पिंगल शास्त्र) :

1. ग़ज़ल के स्वरूप-विधान ।

2. हिन्दी-उर्दू- भोजपुरी के समरूप छंद ।

दुबला-पतला हल्का शरीर के अंतर्मुखी जगन्नाथ के भोजपुरी-सेवा अतना जादे आ गंभीर बा कि अगर तराजू के एक पलड़ा पर उनकर भोजपुरी साहित्य आ दोसरा पलड़ा पर उनुका के बइठा के तउलल जाई त ऊ राकेट नियर ऊपर टँगा जइहन । हमरा सामने ई कहना कि जगन्नाथ के कविता, कहानी आ एकांकी के साधना समानांतर रूप में चलत रहे, बेमानी बा, काहे कि एह सचाई के हमरा से बड़ गवाह खोजलो पर अब ना मिली जे कही कि

www.bhojpurisahityangan.com

जगन्नाथ मूलतः आ प्रथमतः कवि हवन, दर्द आ आँसू के ओइसन कवि जेकर कहानियन के सिसकी के अनुगूँज उनका ग़ज़लन में भी साफ-साफ सुनाई पड़ेला । उनका कविताई में राष्ट्र प्रेम का साथ प्रकृति के मनोरम अंकन पावल जाला । ऊ आशा आ निराशा के दोल पर पेंग मारत रहेवाला कवि हवन, प्रेम आ वर्तमान के चोट से घवाहिल कवि । उनकर लौकिक लोर उनकर कहानियन से, एकांकी से लेके उनकर ग़ज़लन तक में आध्यात्मिक लोर का रूप में बहत लउकता ।

तबो हम पहिले उनकर रचनात्मक साहित्य के संदर्भ में उनकर कहानियन आ एकांकी सब पर विचार करब । काहेकि हमरा डर बा कि अगर हम अइसन पहिले ना करब त विचार करेवाला दोसर-दोसर लोग लुटपटार करे लागी । दोसरका वजह ई बा कि उनका कविताई पर आचार्य विश्वनाथ सिंह आ भोजपुरी के सुधी समीक्षक पण्डित भगवतती प्रसाद द्विवेदी -दूनो जन ठीक से विचार कर चुकल बा । तबो हम विचार करे से भागब ना । व्यास बाल्मीकि आ आउर-आउर कवि-पुंगव लोग हरिकथा कहलक त तुलसीदासो त कहबे नू कइलन । ओसहीं ई जानते हुए कि कवनो जरूरत नइखे, 'तदपि कहेउ निज मति अनुसार ।' के आधार पर हमहूँ कहब, माँ सरस्वती से ई प्रार्थना करत कि हमरो हृदय के अँगना में उतरसऽ, तले हम सँथाइयो लेब ।

जहाँ तक जगन्नाथ के कहानियन के सवाल बा, ऊ अपना 'बाँचल खुचल' के 'आपन कथ' में सँकार लेले बाड़न कि कहानी का ओर उनकर झुकाव 1966 ई. से भइल आ उनकर पहिलकी कहानी 'लछना' 1966 ई. के 'भोजपुरी कहानियाँ' में प्रकाशित पहली कहानी रहे । 'लछना' में उनकर जिअतार कहानीकार के सबूत मिलता । ऊ कहानी ना उनुका पास अब बा, ना ओकर पांडुलिपिये । खैर, उनकर कहानी-लेखन के ई सिलसिला 66-78 ई. माने पूरा एक जुग तक चलल, जवना में ऊ बीस-बाईस कहानियन के रचना कइलन । दुख के बात बा कि जगन्नाथ के लापरवाही से इनकर कई कहानी उधिया-बिला गइली स । जवन बचली स, उहनिये के हम डार्विन के सिद्धांत पर, उनकर पठनीय कहानी मान के विचार करत बानी ।

'लछना' के तलाश जारी बा । तबले 'बाँचल-खुलल' कहानियन के क्रमानुसार प्रकाशन वर्ष, (ई मानत कि कवनो कहानी के रचना-वर्ष आ ओकर प्रकाशन वर्ष एके होखे के गारण्टी ना हो सके) नीचे देल जा रहल बा, जवना से कहानीकार के भावधारा के गतिविधि के अंदाज लगावल जा सकला :

www.bhojpurisahityangan.com

1. मन के दरद, भोजपुरी कहानियाँ, जून-जुलाई 1966 ई.
2. परछाहीं, भोजपुरी कहानियाँ, नवम्बर 1966
3. मन के उदासी, भोजपुरी कहानियाँ, फरवरी 1967 ई.
4. पान पत्ता, भोजपुरी कहानियाँ, मार्च-अप्रिल 1967 ई.
5. जिनिगी के अफुरहट, भोजपुरी कहानियाँ, मई 1967 ई.
6. अकिल से उपधेया, भोजपुरी कहानियाँ, जून 1967 ई.
7. नदी के दू किनारा, भोजपुरी कहानियाँ, फरवरी 1968 ई.
8. अन्हार-अँजोर, भोजपुरी कहानियाँ, दिसम्बर 1969 ई.
9. राजपाट, भोजपुरी कहानियाँ, दिसम्बर 1977 ई.
10. सपना, भोजपुरी कहानियाँ, अप्रिल 1978 ई.
11. हियाव, भोजपुरी कहानियाँ, दिसम्बर 1978 ई.

'खखाइल लोर' कहनी के प्रकाशन -वर्ष के उल्लेख नाहियो भइला पर एकर प्रकाशन 1966-78 के बीच ही रहल होई ।

भोजपुरी कहानीकार जगन्नाथ के 'मन के दरद' संयोग पर आधारित आदर्शोन्मुख कथा बा । तिरवेनी बाबू के बेटी शीला आ हरेंदर सहपाठी रहे लोग आ उनका लोग में 'सह नौ भुनन्दु' भले ना चलत रहे बाकिर 'सहनाववतु' चक्कलसबाजी के रूप ध लेले रहे । अइसना में लखार नाहियो भइला पर कामांकुरण हो गइल रहे । तिरबेनी बाबू आपन शीला के बियाह बेनोकरिहा से ना कर सकत रहन । एह से उनका लोग के कामाग्नि बुताइल बोरसी के आग मतिन हो गइल । बाकिर जसहीं हरेंदर बीडीओ. होके तिरबेनं बाबू के प्रखण्ड में अइलन त उनकर मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, शील-सुभाव आ शीला खातिर झाँकत उनकर भीतरी अनुराग से उत्साहित होके ऊ आपन शीला के बिआह हरेंदर से करे खातिर ललक पड़लन । ई खबर पावते शीला के भी दमित कामाग्नि दनउर हो गइल । उनका लोग के बिआह हो गइल । एह सुखान्तक कहानी पर लोककथा से खोल नाहियों लउकला पर लउक जाता, बेकहले कहा जाता कि जइसे शीला आ हरेंदर के दिन बहुरल, ओहसहीं सबके बहुरो । का एह कहानी से कहानीकार के मन के इच्छा के गंध नइखे आवत जवना में शायद ऊ आ आपन संघतियनो के अइसने दिन के आशा में टकटकी लगवले नइखन लउकत ?

'परछाहीं' कहानी भी आदर्शवादी कहानी बा जवना में दिनेश नाम के एगो युवक के प्रेम रीता नाम के एगो लड़की से हो जाता । रीता खातिर दिनेश आसमान से तारा तूर ले आवेवाला कइअक कउल-करार करतारन

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर जब ओकर गर्भाधान हो जाता त प्रेमी के नाम पर कलंक दिनेश ओकरा से गद्दारी करत दूर हट जातारन । लोकलाज में रीता डूब के मर जातिया ।

एने दिनेश शिक्षक बन जातारन आ उनका डेरा के बगल में एगो वारबनिता के घर पड़जाता । ओह वेश्या के रूप दिनेश के आँख में रीता के परछाहीं नीयन लउके लागता । अपना पूर्वकृत पाप के प्रायश्चित ऊ ओकरा से आपना बियाह-प्रस्ताव का रूप में करतारन जवना के ऊ चकित प्रसन्न वेश्या सहर्ष स्वीकार कर लेलक । बाकिर अइसन ना होय, हम ना कहब; होला, पर निन्यानबे हजार नौ सौ निन्यावे के बाद एगो । आजकाल के प्रेमी कहायेवाला लफुआ सब आपन रिश्तेदारो के वेश्या बना देतारन स ।

'जिनिगी के अफुरहट' कहानी के अफुरहट जानबूझ के बेसाहल अफुरहट बा । राकेश के हाल "भूमि परा कर चहत अकासा" वाला बा । अइसनके लोग ताड़ पर के फेदा ताकते रह जाला; अपना प्रेमिका के नेकबेसर ऊ लोग जब तक निहारत रहला, तबतक कागा ओकरा के ले उड़ला । भकुआ भकुए बनल रह जालन । माया मिली न राम । ऊ त रीता से गइबे कइलन, रीता के पति के मातहती वाला आपन नौकरियो ऊ छोड़ बइठलन ।

'मन के उदासी' में प्रेम के जवन फिलॉसफी बा, कम भा बेस, उहे 'अन्हार-अँजोर' से लेके 'मन के दरद' तक में पसरल बा । हँ, ई ठीक बा कि 'नदी के दू किनार' के मन के दुर्दमनीय बहक, 'मन के उदासी' में तनी परिष्कृत होके 'मन-मन के आपुसी खिंचाव', 'आत्मा-आत्मा के आपुसी खिंचाव' के गेरुआ चोला धारण कर लेता ।

सामाजिक सुधार के दिसाईं 'खखाइल लोर' जरूर एगो सकारात्मक सोच वाली कहानी बिया । बाकिर आज के माइक्रो-परिवारवाला समाज में, सम्भव भइलो पर, असम्भव नीयन लागता । एकरो पर लोककथावाला शुद्धात्मा सवार बा ।

'अकिल से उपधेया' आ 'पान-पत्ता' बइठल ठाला के भोजपुरिया ओह होलियाना रूप के सजीव चित्र खड़ा कर देता जवना के उल्लेख देसी का, बिदेशी बिशप हेबेर अपना जर्नल में कई साल पहिले कर चुकल बाड़न ।

जगन्नाथ के कहानियन के भाषा खाँटी भोजपुरी कहावतन आ मुहावरन से भरल बा । उदाहरण देल दिनाय अधुआना बा ।

पाठकन के आलोचना में उत्साहित करे खातिर बुला ऊ अपना त्रिवेणी के तिरबेनी, आ हरेंद्र के हरेंदर कर देले बाड़न बाकिर शीला के शीले

www.bhojpurisahityangan.com

रहे देले बाड़न । शब्दन के ई रूप उहनी के ददिअउरा-ननिअउरा के यात्रा समझे के चाहीं ।

अब तनी जगन्नाथ के एकांकी पर चर्चा हो जाय । ई सब गँवई मनोरंजन के मुहूर्त में लिखल गइल बाड़न स । तबो, कवनो एकांकी अइसन नइखे जवना में आजादी के बाद के भोजपुरिया गाँवन के दसा-दिसा नइखे उरेहल गइल आ जवनन में समाज-निर्माण खातिर उत्साहपूर्ण ललक आ रचनात्मक संदेश ना होखे । एह एकांकी सब के रचना काल सात रंग में देल बा ।

एगो दिन एगो जिनिगी में जहाँ नेता टाइप बातासल कवि के चित्र बा, उहँवे एगो कर्तव्यनिष्ठ सिद्धांतवादी सम्पादको के पेशागत मजबूरी देखावल गइल बा । एकरा साथ आजकाल के पीली पत्रकारिता के भी भण्डाफोड़ कर दिहल गइल बा ।

'सजाइ' एकांकी में समय के साँच का साथ समाज में हो रहल परिवर्तनो सब के झाँकी ना । एह एकांकी के पात्र साधु धर्म के बारे में जवन आपन विचार रखता, ओकरा के भोजपुरी के गद्यात्मक गँवई गीता समझे के चाहीं । धीरहीं धीरे सही, समाज में बदलाव आ रहल बा ।

'नया ढंग नया रंग' एकांकी में आजकाल के कालेजिया छात्रावासन के पच्छिमी जीवन-शैली के रंग में रंगल छात्रन के वैचारिक प्रौढ़ता के नीके तरे रेखांकित कइल बा । ऊ लोग ठीक से पहचान रहल बा कि आजकाल के राजनीति के प्रदूषण जिनिगी के हर क्षेत्र के प्रदूषित कर रहल बा । आज के सामाजिक अधोगति में आधुनिक घटिया कामोद्दीपक फिल्मन आ हीरो-हीरोइन के अर्द्धनग्न ड्रेस-स्टाइल के हाथ कम नइखे । आज छात्रन में असली आ नकली कवियन में भेद करे के विवेक बा । ऊ लोग आधुनिक समाज के नैतिक ह्रासोन्मुखता के भी दुखी मन से देखत एकरा के रोके के मने-मन उपाय सोचता ।

'कवि के परिवार' में कविता के सनक लेले एगो अइसन कविलाँठ के चित्र बा जे अपना के कवि समझे के खुशफहमी में अपना पूरा परिवार के जाने-अनजाने तहस-नहस कर रहल बा ।

'अशोक के शोक' में कई बेर के घोंटल आ घिसल-पिटल प्रसंग के चर्चा बा । किरानियो के नौकरी पावेवाला आदमी के मिजाज गते-गते दफ्तराना हो जाला आ ऊ अपना घरो के आपन दफ्तरे समझे लागेला । आज त ई एकांकी आउर प्रासंगिक बा, काहेकि आर्थिक मंदी के एह दौर में छँटनी

www.bhojpurisahityangan.com

के तलवार हर नौकरिहा के माथा पर लटक रहल बा । एह खूबसूरत एकांकी के जान एकर हाजिरजबाबी से भरल संवाद बाड़न स । लागता जइसे रमेश में जगन्नाथ के परकाय प्रवेश कर गइल बाड़न । 'लिखंत' एकांकी सिद्ध करता कि गँवई लोग भले अनपढ़ होखे, बाकिर बेवकूफ ना होखे । रामदहिन आ लगन के फुटपाथी ज्योतिषी मूड़े के कोशिश करत खुदे उनका लोग से मुड़ा जाता ।

रहल जगन्नाथ के भोजपुरी भाषा के, त का गद्य आ का कविता, जगन्नाथ के भाषा आत्मीयता आ हास्य-व्यंग्य लेले कबो भेदत त कबो थिरकत चलत खाँटी भोजपुरी भाषा ह । हम पूरा जिम्मेवारी का साथ कह सकत बानी कि भोजपुरी शब्दकोश आ कहावत-मुहावरा कोश खातिर विवेकी राय, जगन्नाथ, अविनाश चंद्र विद्यार्थी, चतुरी चाचा आ कु. ना झड़प के भोजपुरी रचना सब के देखले काफी होई । कथा गइल बन में समझीं अपना मन में ।

अब जगन्नाथ के कविता पर विचार करे के पहिले उनकर काव्य सिद्धांतन पर विचार जरूरी बा, काहेकि जगन्नाथ बेलूरा कवि ना, सचमुच के कविवर हवन । जवना कवि के पास कवनो काव्य-सिद्धांत भा काव्य रचना के प्रौढ़ पीठिका ना होखे, ऊ जादेतर बेपेनी के लोटा होला ।

कहल जाला कि एके सत्य अलग-अलग समय में अलग-अलग चिंतकन के मन में उगत रहेला, काहेकि ऊ ओइसन सत्य होला जवना में परिवर्तन होइबे ना करे । एह खेयाल से जगन्नाथ पश्चिमी काव्य चिंतक वर्ड्सवर्थ के सबसे जादे करीब लउकत बाड़न । उनको विचार से कविता प्रबलतम संवेदना के अनायास उद्गार, शांत समय में स्मृत भावोद्गार आ सुन्दर संवेदन सब के सुन्दर शब्दन में सुन्दरतम विन्यास ह । जगन्नाथ के काव्यधारणा पश्चिमी काव्य चिंतकन के काव्यधारणा के समरूप (इकुअल इन ऑल रेसपेक्ट बा) बा । अइसे त तुलसीदास से लेके आधुनिक चिंतक तक सभे काव्य खातिर बुद्धि तत्त्व के महत्त्व मनले बा- "जब बरसहिं बर बारि बिचारू । होहिं कवित मुक्ता मनि चारू ।" बाकिर कविता के असल तत्त्व ओकर हृदयोन्मुखता माने मर्मस्पर्शिता ह । एही से ग़ज़ल के संदर्भ में जगन्नाथ ओकरा के 'आँतर के बात' कहले बाड़न । कविता खेल ना ह । एही से ठाकुर कवि ई कहत अफसोस जतवले बाड़न कि "लोगन कवित्त कीनो खेल करि जानो है ।" कविताई दीवानगी खोजेला, सम्पूर्ण समर्पण । संवेदना-स्वागत के अहर्निश तत्परता, ओकरा के पकड़ के ओकरा माफिक

www.bhojpurisahityangan.com

अक्षरन आ शब्दन, छंदन आ अलंकारन के जोड़ाजामा तइयार राखे के औकात आ बिना समय गँववले उहनी के उपयोग कर देना कविताई के तकाजा ह । ई यौगिक प्राणायाम के स्तम्भन क्रिया ह । कविता से जादे महत्त्वपूर्ण बा जगन्नाथ के ग़ज़ल-धारणा, काहेकि ऊ अब ग़ज़ले के होके रह गइल बाड़न, ओइसन फ़कीर जेकरा पास ग़ज़ल के अलावा कुछ नइखे; फकीर बाकिर ग़ज़ल के बादशाह । कहल जा चुकल बा कि जगन्नाथ ग़ज़ल के आँतर के बात-पसगबत के बात कहले बाड़न । ग़ज़ल खातिर लमहर आ अनवरत साधना के जरूरत पड़ेला । सम्पूर्ण समर्पण एकर माँग ह । ई पार्ट टाइम बिजनेस ना ह । एह मार्ग में एकला भी चले के हौसला चाहीं, परिवार संसार से निरपेक्ष सादगी आ साफगोई एकर अन्यतम विशेषता ह जवना के चलते जगन्नाथ ग़ज़ल के मेजबान तक पहुँचे वाली काव्यविधा मनले बाड़न । ग़ज़ल के बात कवि-हृदय (ग़ज़ल गो) से निकल के सुननिहारन भा पढ़निहारन के हृदय पर सहाउर चोट करत सीधे 'साफ्ट लैण्डिग' करेला । ग़ज़ल ग़ज़लगो के आँख के बेशकीमती ऊ पानी ह जेकरा के ग़ज़लगो जमीन पर ना गिरे देवे । एकरा खातिर ओकरा लमहर कठिन साधना करे के परेला । असल में ग़ज़ल ग़ज़लगो के कोमल हृदय के स्वरहीन आर्तक्रंदन ह । ऊ चस्का ह जवन हठ के रूप ध लेला आ बिना एह हठधर्मिता आ चसका के ग़ज़लगो सीमा तक पहुँचल अपना नशा के अपना ग़ज़लन में सही रूप में ना उतार सके । ई लौकिक ना, आसमानी (आध्यात्मिक) साधना ह जवना के बल पर ऊ मनचाहल ग़ज़ल परियन के अपना हृदय के अँगना में नचावत रहेला । ऊ हरदम अश्रून्मुख (लोरोन्मुख) होला आ ओकर हृदय स्वरहीय चीत्कार से भरल रहेला जेकरा पर काबू रखे के इल्म सिर्फ ग़ज़लगो के पासे होला । ई बेलोर चुववले रोये के ऊ इल्म ह जवन सूरमा के इल्म होला । सूरमे अइसन रुलाई आ स्वरहीन चीत्कार के बाहर ना होखे दे सके; आउर लोग नकली शायर आ ग़ज़लगो लोग के दर्द आ पीर, उनका लोग के रोआई अपना ससुरार में भाई से भेंट भइला पर मेहरारुअन के रसमी रोआई भा भोंकार पारला के रसम अदायगी भर ह। आजकाल के जादेतर तथाकथित ग़ज़लगो लोग के ग़ज़लन में व्यक्त पीड़ा के औरतन के 'फाल्स डेलिवरी' के समय के पीड़ा समझे के चाहीं । पेट में बच्चा नदारद आ सउरी में पेट-मड़ाई के स्वांग ! अइसन रोहँटिया ग़ज़लगो लोग ओखिांचु आवने रोआई ना रोवे, जब ऊ लोग रोवेला त आँसुअन के बाढ़ में ऊ लोग खाली अपने छपका नीयन डूबत-उतरात बहत रहेला ।

www.bhojpurisahityangan.com

कविवर जगन्नाथ ग़ज़ल में गेयता के अनिवार्य गुण मनले बाड़न । गेयता के गुण ग़ज़लन में बीन के माधुरी भर देला, जवना के सुने खातिर आदमी आपन कान ओड़ले खड़ा के खड़ा रह जाला । एह सिलसिला में ऊ अपना ग़ज़ल कहे के विशिष्टता रेखांकित कइले बाड़न जवन आत्मश्लाघा के परिधि छूए खातिर लपकत-लउकता । अब जगन्नाथ जी के ग़ज़लन के आउर-आउर विशेषता बतावे के काम के अबहीं हम थोड़े देर खातिर एहिजे रोक देत बानी, ना त 'पाँख सतरंगी' के अंत में चर्चा-समीक्षा में विपरीतरति नीयन हो जाई ।

कहल जा चुकल बा कि जगन्नाथ मूल रूप से गीतकार हवन । जब उनका गीतन के पहिलका संग्रह 'पाँख सतरंगी' निकलल त भोजपुरी काव्य पाठकन के बीच तहलका मच गइल । बहुत ना लिखे में विश्वास करेवाला, कविता के अप्रतिम पारखी आचार्य विश्वनाथ सिंह के एह संग्रह पर अभिमत आइल -"भोजपुरी के भावुक, कल्पनाशील, सुकुमार गीतकार जगन्नाथ का सहारे पाठक के भावकता कहाँ-कहाँ जाई, एकर अनुमान कइल कठिन बा । अतना हम जानत बानी कि जगन्नाथ का कल्पना के पाँख बहुत कोमल हवन स, आ एह पाँखन के रोमिल कोमलता का भीतर से एगो जोत फूट रहल बा, एगो आभा निखरि रहल बा । हमरा इहो पता बा कि एह 'पाँख सतरंगी' में आकास के अनेक रंगन के साथे-साथे माटियो के रंग बा ।.... जगन्नाथ मूलत: अनुभूति के कवि हवन ।" आचार्य विश्वनाथ सिंह जवना के माटी के रंग कहले बाड़न, ओकर मतलब धरती के यथार्थ से जुड़ल बा । एह से जगन्नाथ सचमुच जिनिगी के कवि, जिजीविषा के कवि हवन; सोगहग जिनिगी के कवि ! एह से उनका गीतन में जहाँ आशा बा उहाँ निराशा भी । जगन्नाथ प्रकृति-पुत्र हवन । एह से उनका गीतन में प्रकृति के सतरंगी छटा उतर आइल बा । का धधकत बइसाख-जेठ आ का उमड़ल बरसात- सबके सजीव चित्र उनकर गीतन में दिखाई पड़ेला । बरसात के एगो ध्वन्यर्थमय चित्र देखीं :

झन-झन झन झींगुर का मातल झंकार में
गँवई सिवान बहल कजरी का धार में

xx xx xx

सनन सनन बीन बजल पुरवा बयार में
[आइल सखि, आइल दिन बरखा बहार के ।]

अब झुलसावे वाली ग्रीष्म ऋतु के एगो प्रभावशाली चित्र देखीं-

www.bhojpurisahityangan.com

मधुवन झुलसि गइल, फुलवन के झाँवर भइल सुरतिया ।
कुँअना धइल पताल, ताल तलइन के दरकल छतिवा
सिकुर-सिकुर अझुराइल नदिया गतरे गतर सेवार के पानी उतरल धार के ।

बाकिर एह सबसे चटक नीचे के बइसाख वालन ध्वन्यर्थमय चित्र में बा :

हनि हनि मारे तीर अगिनि के पछुआ हहरि हहरि के
तलफि तलफि रह जाला जिएरा लहर लहर दुपहर के
हफर-हफर हाँकत चिरइन.....
तूर दिहल सब तार के ।

अइसे त 'पाँख सतरंगी' में देश-प्रेम के अलावा जगन्नाथ के दूगो बेशकीमती ग़ज़लो बाड़ी स, बाकिर साँच पूछीं त उनकर ग़ज़लन के स्वतंत्र संकलन 'लर मोतिन के' भोजपुरी ग़ज़लन के सुइसगेट खोल देलक । साहित्य-मर्मज्ञ भगवती प्रसाद द्विवेदी अक्षरशः सही लिखले बाड़न- '....1977 में जब जगन्नाथ जी के पैंतीस गो ग़ज़लन के 'लर मोतिन के' छपके आइल त ऊ भोजपुरी ग़ज़ल-लेखन के दिसाईं 'टर्निंग प्वाइंट' साबित भइल ।' 'हमरा त बुझाला कि ओही समय से जगन्नाथ अपना शेरन के 'वन टू टू वन' वगैरह के आवाज से परेड करावे लगलन आ असहीं करत ऊ भोजपुरी विधा के कैप्टन पद से मेजर जेनरल के पद तक पहुँच गइलन । जे होय, लर मोतिन के हर ग़ज़ल बेशकीमती शेरन के मोती से बनल लर बा -'लर मोतिन के' ।

जगन्नाथ के दिल खाली दिले ना, ऊ दर्द के एगो अइसन भट्ठी ह, जवना के धीमा-धीमा आँच पर उनकर ग़ज़ल पाकत रहेली स । पीर के एह मदिरा के पीए के उनका बान पड़ गइल बा । ऊ एकरा के पीए के हठी बाड़न आ ओह दर्द-मदिरा में आठ पहर चौबीसो घड़ी बौरंग-मस्तान बनल रहेलन । उनका अपना अक्षय दर्दवाला हैसियत पर अभिमान बा । दर्द के उनकर ई भण्डार अइसन अक्षय बा कि ऊ आकाश से पाताल तक के नेवत रहल बाड़न आ निमंत्रित होय वाला लोग से डंका के चोट पर कह रहल बाड़न कि दर्द के एह मदिरा-पान के महोत्सव में ऊहो लोग छक के पीओ, एह मदिरा के कौनो 'टान' ना होखे पाई । प्रेम से उत्पन्न पीड़ा से बनल उनका मदिरापान में पाप-पुण्य के कवनो सवाल नइखे । उनका एह मदिरालय में पाप-पुण्य समधी-मिलान देखहीं लायक बा । जइसे हिन्दी के मध्यकालीन ब्रजभाषा काव्य में घनानंद पीर के कवि कहालन, ओसहीं जगन्नाथ के भोजपुरी ग़ज़ल के दुनिया में पीर के ग़ज़लगो का साथ ग़ज़ल के पीर भी कहे

www.bhojpurisahityangan.com

के चाहीं । उनकर जन्म कुंडलियो में अमिट पीर भोगत रहे के बात ढँका गइल बा । दर्द-पान आ दर्द-सहन के अइसन मर्द आउर कहीं नइखे लउकत । कहल जा सकेला कि दर्द सम्बंधी सब प्रकार के पवित्र अनुभूतियन के उजागर करे के कापीराइट अगर केहू के पास बा त ऊ कविवर जगन्नाथ के पास बा । दर्द झेले के अइसन शौकिया हौसला आउर कतहूँ नइखे लउकत । अपना दर्द के औकात आ हैसियत पर उनका गर्व बा । उनकर दर्द-दान विद्या-दान के समकक्ष बा जेमें दान से कुछ घटे ना, बढ़बे करेला ।

ई जानत भी कि प्रेम में धोखा होला, ऊ एकरा के सोहाग भाग मानत जान हथेली पर लेके चले वाला अप्रतिम प्रेम-वीर हवन । ऊ एह दिसाईं पूरा घठा आ पकठा गइल बाड़न । ऊ प्रेम के एह पीड़ा आ आँसुअन के प्रेम में मिलल पुरस्कार समझेलन ।

अब ग़ज़ल कहनिहार जगन्नाथ के आशिक-माशूका पर भी तनी विचार कर लेल जाव । अगर कवनो पाठक ई समझ लेता कि जगन्नाथ के शेरन के आशिक के इश्किया व्यापार पूरी तरह एकतरफा बा, ऊ ओह धुनिया नीहन बा जे अपना रूई के ढेर से बेपरवाह आपन धुनकी धुनत जा रहल बा त एहिजे ओकर पाठकीयता के योग्यता शक के घेरा में आ जाता । ई लौकिक ना, अलौकिक, आसमानी इश्क ह, आत्मा आ परमात्मा के नीच के परम पवित्र प्रेम ह । एह इश्क के लौकिक रंग के चश्मा से देखल गुनाह होई । ई सूफियन के ऊ प्रेम ह जवन भारतीय रसिको-पासकन के प्रेम साधना के केन्द्रबिन्दु ह । सूफी प्रेमसाधाना में उपास्य के माशूका आ उपासक के आशिक मान के इश्क व्यापार चलेला, ठीक ओसहीं जइसे भारतीय रसिकोपासना में परमात्मा के दुलहा आ जीवात्मा के दुलहिन मानल जाला- 'दुलहिन गावहु मंगलाचार ।'

पहिले के ग़ज़ल के संदर्भ में ग़ज़ल सचमुच आशिक-माशूका के पसगइत बातचीत भा माशूका के आकर्षक जुल्फ खातिर ओकर अदम्य लालसा के अभिव्यक्ति कहल जात होखे, बाकिर आज के ग़ज़लगो ग़ज़ल के ओह धारणा से अपना मन के गुदगुदावत अपना ग़ज़लन के सामाजिक यथार्थ के चित्रण आ ओमें बदलाव के सशक्त जरिया मानत बा । 'लर मोतिन के' से लेके 'खुद के तलाशत' तक के ग़ज़लन से हमार एह धारणा के पुष्टि हो जाता । एह से इहो पता चलता कि ग़ज़ल धारणा जड़ धारणा ना होके देश-काल-सापेक्ष सतत, गतिशील धारणा ह । जगन्नाथ के 'लर मोतिन के' से ही लागे लागता कि अपना समय के हरकत के अंकन आज के ग़ज़ल

www.bhojpurisahityangan.com

कहनिहारन के अनिवार्य गुण आ उनका लोग के सामाजिक उत्तरदायित्व ह । जगन्नाथ के खेयाल में उम्दा शायर ऊ होला जे अपना समय से अपना के अलग ना राखे -'उम्दा शायर के बस सिफत ईहे/वक्त से ना कबो जुदा होला ।' ऊ अपना शेरन के 'वक्त का रंग के सियाही से गोदल' कहले बाड़न । अपना एक दोसर शेर में ऊ अपना के वक्त के गवाह बतवले बाड़न आ बल देके कहले बाड़न :

नफ़रत के बात बाटे, मुहब्बत के बात बा ।
हमरा ग़ज़ल में वक्त के हरकत के बात बा ॥

कहल जाला कि कवनो कवि भा शायर अपना सब रचनन में लगभग-लगभग एके तरह के बात भिन्न शब्दावलियन आ भिन्न रचना शैलियन में कहेला । ई ठीक बुझाता, काहेकि जगन्नाथ के 'लर मोतिन के' से लेके 'खुद के तलाशत' तक के ग़ज़ल सब एह मान्यता के पुष्टि करत बाड़ी स । ऊ अपना दूनों ग़ज़ल संग्रहन में समाज आ परिवार के दरकत सम्बंधन, पारिवारिक सदस्यन के बीच व्याप्त अविश्वास आ पारस्परिक उपेक्षा भाव, गाँवन के अबाध शहरीकरण आ गँवई आबादी के नगरोन्मुखता, इनसानियत के तेज गति से विलोपीकरण, एह सीमा तक कि इनसानियत के चर्चा तक के उपहास कइल जाता, चेतन त चेतन, अचेतन तक में व्याप्त चुगलखोरी के प्रवृत्ति, जमाना में भारी बदलाव, दोस्त का, कायदा के दुश्मनो के ना मिलल, बेलाला जिनिगी में नैतिक मूल्यन के क्षरण का साथ समाज में हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार आ अपराध, अपराधियन के दुर्दम हौसला बेसहारापन, बेचारगी, जल आ प्राणवायु-संकट- वगैरह वगैरह समस्या सब आ विसंगतियन पर जगन्नाथ अँगुरी रखले बाड़न ।

अइसन बड़ फलक पर काम करेवाला ग़ज़लगो में आत्मप्रशंसा के प्रवृत्ति अस्वाभाविक ना होला । जगन्नाथ भी अपवाद नइखन, जब ऊ कहत बाड़न-

शेर रौनक के बा, रंग के बा बहुत ।
का जगन्नाथ महफिल में आइल रहे ?

कोमल भावना के आकाश में उड़त चिरई नीहन शायरन में स्त्रैणता के भाव आइए जाला । ऊ मेहररुई चोन्हा से अपना के बचा ना सके-

कहत बानी अइसे, मगर कइसे कह दीं ।
ग़ज़ल लोग लायक कहे आ गइल बा ॥

ई बात आत्मप्रशंसा के ही भंगिया बा, बाकिर एकरा के सिद्ध

www.bhojpurisahityangan.com

ग़ज़लगो के ऊ चोन्हा समझे के चाहीं, जवना के भारतीय काव्यशास्त्री 'बिब्लोक' के मौसेरी बहिन समझिहें ।

अपना उत्तर जीवन में जगन्नाथ सिर्फ ग़ज़ल आ ग़ज़ल खातिर समर्पित ओह दीवाना फकीर मतिन होके रह गइलन, जेकरा कवनो तरह के अभिमान ना रह गइल । अगर अभिमान रहल त अपना दर्द के उदवेगल ग़ज़लन आ आँसुवन के जेकरा छोड़ के उनका पास केहू के देवे लायक कुछुओ ना बाँचल । उनकर 'स्कूल फार ग़ज़ल' बहुत धूमधाम से पटना में चलल जवना में से एक से एक प्रवीण ग़ज़लगो तइयार भइलन, बाकिर एकरा खातिर अतिशय उत्साह में ऊ बहुत संस्कार से हीन आ दृष्टिहीन शागिर्दन के भी शरणस्थली बन गइलन जेवन लोग उनका खातिर भस्मासुर हो गइल । काफिया आ रदीफ़ तक से बेपरवाह ई लोग ग़ज़ल के नाम पर संवेदनाहीन शब्दन के प्रपंच मात्र वाग्जाल रचत अपना के जगन्नाथ के समकक्ष माने लागल । एह बात के अइसन आघात अहिंसक जगन्नाथ के दिल पर पड़ल कि एह दंश के अतिशय क्षुब्धावस्था में आकाश का ओर ताकत ऊ कहत बाड़न—

पकड़ले रहल जिन्दगी भर जे अँगुरी ।
ऊ धइले बा पहुँचा हिमाकत त देखी ?

जगन्नाथ तुलसी के एह चेतावनी के बावजूद कि 'वायस पलियहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहूँ कि कागा ।' 'करतब वायस वेष मराला' वाला अइसन लोग से अपना के बचा ना पवलन ।

अब जगन्नाथ के ग़ज़ल के शिल्प पर भी तनिक विचार अनुचित ना कहाई । जइसे दर्द भा पीर ग़ज़ल के जानदार घटक ह, ओसहीं कथन के नज़ाकत आ नफ़ासत सादगी आ सहजता, चमत्कार आ प्रतीकात्मकता भी जवन जगन्नाथ के ग़ज़लन में इहाँ-उहाँ सगरो लउकता । उनका शेरन के नजाकत आ नफासत खानदानी मेहरारुइन के नजाकत आ नफासत के चुनौती देता । एह नजाकत आ नफासत के ऊ ग़ज़ल के ऊ गुण मनले बाड़न जवना से ग़ज़ल ग़ज़ल हो जाले । जगन्नाथ के ग़ज़लन के साफगोई आ सादगी का ओर इशारा कइल जा चुकल बा । जगन्नाथ के कवनो शेर उठाईं, मिसरा अव्वल में अतना चिकनाहट मिली कि सुननिहार भा पढ़निहार गप्प दे मिसरा सानी के भावगर्त में फिसल के डूब जाई । चमत्कार त ग़ज़ल के ऊ ताक़त आ आकर्षण होला, जेकरा के ग़ज़ल के आत्मा कहे के चाहीं । ग़ज़ल अपना सुननिहारन भा पढ़निहारन के वाहवाही में दोसरा बेर पूरा होला जब ओह लोग

www.bhojpurisahityangan.com

के पास चिहाये के सिवा आउर कुछ ना रह जाय-

समय का शराफत के दूसीं न अइसे,
कहीं, ई कम बा जे बानी सलामत !
आ
इनसानियत के भाव गिर गइल बाजार में ।
रास्ता भुला गइल अँजोर के अन्हार में ॥

-लर मोतियन के पृष्ठ-15

विरोधाभासपूर्ण कथन से कविता में तेज आ चमत्कार आ जाला । उलटबाँसियन के इहे शृंगार होला । एही से काव्यशास्त्र में विरोधाभास के काव्य के शोभाकारक धर्म कहल गइल बा । कविवर जगन्नाथ के कुछ उम्दा शेरन में विरोधाभास के अप्रतिम छटा देखे के मिलता:

रास्ता भुला गइल अँजोर के अन्हार में ।
नींद अँखियन में बा लोग जागि रहल ।

-लर मोतियन के पृष्ठ-21/1

आ

गिर के उनका नज़र से उठ गइल बानी हम ।

-खुदा-17/2

असहीं प्रतीकात्मकता काव्य के ऊँचाई पर पहुँचावेवाला गुण ह । जगन्नाथ के ग़ज़लन में भी प्रतीकन के सौंदर्यवर्द्धक प्रयोग भइल बा । नीचे कुछ ओइसने प्रतीकन के उल्लेख कइल जा रहल बा :

बहार	-	सकरुण माशूका
पतझर	-	निष्करुण माशूका
किनारा	-	आशिक
लहर	-	माशूका; छुटभैया ग़ज़लगो
फूल	-	सुदिन
काँटा	-	दुर्दिन
मधुवन	-	प्यार
समुंदर	-	दुनिया; मँजल ग़ज़लगो
मौसम	-	माशूका
		वगैरह

ध्यान देवे के बात बा कि जगन्नाथ के कवनो-कवनो प्रतीक परम्परा

www.bhojpurisahityangan.com

(श्लिष्ट) बाड़न स । 'लहर' आ 'समुन्दर' अइसने परतदार प्रतीक बाड़न स जवन संदर्भ भिन्नता का अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थन में प्रयुक्त बाड़न स । ध्यान देवे के बात बा कि ई साँचो के प्रतीक हवन स, चिह्न ना ।

एह संदर्भ में हम साफ कर देल चाहत बानी कि जगन्नाथ के शेरन में पावल जायेवाला प्रतीकन के ओइसन कवनो कुंजी नइखे जइसन 'पद्मावत' में बा, होइयो ना सके काहे कि ग़ज़ल विधा मसनवी के आख्यान-विधा ना ह । तबो जगन्नाथ के प्रतीक उनका ग़ज़लन में पावल जायेवाली सादगिये नीहन साफ बाड़न स, आ अगर खोलहूँ के बा त उहनी के खोले खातिर उनकर ग़ज़लन के हर योग्य पाठक का पास 'मास्टर की' नीहन पावल जाला ।

ई सब बा, बाकिर जगन्नाथ के भोजपुरी सेवा के अक्षय आधार बा उनकर लिखल 'भोजपुरी ग़ज़ल के विकास-यात्रा' जवन भोजपुरी ग़ज़ल के इतिहास-ग्रंथ बा । बाकिर आउर दू ग्रंथ ग़ज़ल के शिल्प-विधान आ 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' उनकर इल्मुल उरूज से सम्बंधित ऊ मूल्यवान ग्रंथ बाड़न स, जवन उनका के कविवर से आचार्य के पद पर धँसोर के सादर बइठा देत बाड़न स । ई तीनों काम पितमरू के काम रहे, जवन जगन्नाथ जइसन अंतर्मुखी आ धीरजवाला चेतन आदमी ही कर सकत रहे । इल्मुल उरूज से सरोकार राखेवाली उनकर ई दूनों किताब नितांत सारस्वत आ मनुमेण्टल बाड़ी स, जवन उनका के तबतक अमर रखिहें स, जबतक ग़ज़ल रही । 'ग़ज़ल के शिल्प' विधान ना खाली भोजपुरी पाठकन, बलुक उर्दू पाठकन खातिर भी समान ढंग से उपयोगी आ महत्त्वपूर्ण बा । कहाँ ले कहीं, हरि अनंत हरिकथा अनंता ।

जब-जब अंतर्मुखी जगन्नाथ हमरा आँखिन का सोझा प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप में आवेलन, हम गीतकार वीरेन्द्र मिश्र के ई दू पंक्ति जरूर गुनगुना उठिला-

रहता हूँ भीड़ में वीरान के सहारे
जैसे कोई मन्दिर हो गाँव के किनारे ।

-एन/14, प्रोफेसर कॉलोनी, चित्रगुप्तनगर,
कंकड़बाग, पटना-20

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

गजल के प्रवर्तक : गजल जस सोभाव

-डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

मिलल कुछ एह तरह के रस नसा पिअते चढ़ल हमरा
भइल ई हाल अब खाली लिखत-गावत गजल बानीं

-जगन्नाथ

जगन्नाथ जी के नाम भोजपुरी साहित्य के सँवारे वाला पुरोधा लोगन में सामिल बा । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्लेटफार्म अइसन रहे कि भोजपुरी के एक से बढ़ के एक भोजपुरिया पुरोधा लोग के सनेह आ सान्निध्य मिलल । एही पुरोधा लोग में एगो जगन्नाथ जी जइसन बेकती बानीं । भोजपुरी के सुकवि, गजलगो आ गजल के प्रतिष्ठापक । जगन्नाथ जी के काव्यकला के ज्ञान कवनो काव्यशास्त्र के अध्येता से कमजोर ना । मिलनसार बेकती । जगन्नाथ जी बहुत दिन ले राँची टेलिफोन डिपार्टमेंट में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत रहीं । हम राँची के नगीचे पतरातू में रहत रहीं । प्राय: राँची आवे-जाये के अवसर भेंटा जात रहे । काम से समय बचला पर जगन्नाथ जी के दरसन के अवसर ना छोड़त रहीं । बाद में हम बदल के काँटी, मुजफ्फरपुर आ गइनी आ जगन्नाथ जी पटना । बोरिंग कैनाल रोड में जब ले उहाँ के आवास रहल, पटना गइला पर उहाँ से भेंट करे के अवसर भेंटात रहल । 1985 ई. में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यकारिणी में पदधारी भइला से हर बैठक में जगन्नाथ जी से भेंट-मुलाकात होत रहल, उहाँ का पहिले से संगठन में रहीं ।

1990 ई. तक हमार गद्य आ पद्य रचना फुटकर रूप से पत्र-पत्रिकन में छपल; 'घाटी की आवाज', 'आगे-आगे' जइसन काव्य संकलन में हमरो रचना शामिल रहे आ 'दू रंग' काव्य संग्रह छप चुकल रहे । हम 'कोइल' नाम के पत्रिका के संपादन करत रहीं त 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के संपादक मंडल में पांडेय कपिल जी जोड़ लेले रहीं । हमार भोजपुरी प्रबंधकाव्य का पी-एच.डी. के शोध-प्रबंध पर 1991 में डिग्री मिलल । हम सम्मेलन के सांगठनिक काम में तत्पर रहीं । पांडेय कपिल जी चाहत रहीं कि हमार पोस्टिंग पटना में होखे त सम्मेलन के कार्य में अउर योगदान कर सकब । उहाँ का हमरा विभाग के सदस्य प्रशासन के इहाँ पैरवी में लागल रहीं । एही क्रम

www.bhojpurisahityangan.com

में हमार गजल-संग्रह 'अचके कहा गइल' के प्रकाशन के विचार भइल । 'कोइल' पत्रिका के संपादक डॉ. भट्टाचार्य हमार पांडुलिपि ले गइलें आ कम्पोज कर के दे गइलें । सवाल रहे । भूमिका के लिखी ? गजल-संग्रह के भूमिका जगन्नाथ जी से बढ़िया के लिख सकत रहे ? हम पटना कपिल जी से मिलनी आ दूनो जने जगन्नाथ जी के पास गइनी । जगन्नाथ जी खुशी-खुशी तैयार हो गइलीं आ समय से 'सवाद लीं, संवाद दीं' शीर्षक से भूमिका लिख के देलीं । हालाँकि गजल के शिल्प के दिसाईं ओह में खामी रहे । बाकिर जगन्नाथ जी सम्हारत आपन भूमिका लिखलीं, हतोत्साहित ना कइलीं । विमोचन डॉ. अशोक पांडेय जी, आई.ए.एस. के द्वारा भइल । जगन्नाथ जी उपस्थित रहलीं ।

जगन्नाथ जी काव्य विधा पर केन्द्रित पत्रिका 'कविता' के संपादन करे लागल रहीं । छपाई, सफाई, गेट अप आ रचना के स्तरीयता के दिसाईं एह पत्रिका के बराबरी ना रहे । हमरा के नियमित रूप से पत्रिका भेजत रहलीं आ देत रहलीं । एकर कई गो विशेषांक निकलल आ कई गो किताबन के प्रकाशन के भूमिका एकरा से बनल । इहाँ का 'समय के राग' नामक गजल संग्रह के संपादन श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के साथ मिल के कइलीं । एह संग्रह में सोरह गजलकारन के एक सौ एकावन गजलन के बड़का गुलदस्ता प्रस्तुत भइल । हम जगन्नाथ जी के आभारी बानी कि एह संग्रह में हमरो दस गो गजल सामिल कइलीं । एह संग्रह के गजलकारन आ ओकरा गजलन पर आधारित लमहर भूमिका भगवती जी से जंगन्नाथ जी लिखववले बानी । जगन्नाथ जी एकरा बहुत पहिले तीस गजलकार लोग के एक-एक गजल के संग्रह 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' नाम से निकलले रहीं । ओहू में गजल पर एगो बढ़िया आलेख बा । समवेत संकलन निकाले के जगन्नाथ जी के अलावे डॉ. अशोक द्विवेदी आ मधुर नज्मी के प्रयास रहल बा । मगर, भोजपुरी गजल के समीक्षात्मक इतिहास पर पहिला आ महत्वपूर्ण काम जगन्नाथ जी के बा ।

जगन्नाथ जी भोजपुरी गजल के आधुनिक काल के प्रवर्तक बानी । जवना गजल विधा के भोजपुरी में ठोस शुरुआत उनइसवीं सदी के आखिर में तेग अली तेग कइले रहस आ उनकर संग्रह 1895 ई. में 'बदमाश दर्पण' नाम से छप चुकल रहे । ओइसे तेग अली तेग 1895 के पहिले से गजलगोइ करत रहलें । 1901 ई. तक भोजपुरी में कवनो संग्रह त भोजपुरी में ना आइल,

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर, बेढब बनारसी, गुरु बनारसी आ विश्वनाथ प्रसाद शैदा जइसन कवि रहलें जे भोजपुरी गजलगोई के फन में माहिर रहलें आ फुटकर रूप मे ओह लोग के गजल मिलत बा । सन् 1961 के बाद जगन्नाथ जी सहित करीब सतरह-अठारह कवि लोग गजल के क्षेत्र में उतरल आ भोजपुरी आ हिन्दी के पत्र-पत्रिकन में छपे लागल । 1967 ई. में जगन्नाथ जी अपना काव्य-संग्रह 'पाँख सतरंगी' में दूगो गजलो सामिल कइले रहलीं । बाकिर, जब 1977 ई. में उहाँ के गजल संग्रह 'लर मोतिन के' ए्गल, ओकरा बाद से भोजपुरी गजल अपना उरूज के ओर बढ़ल । भोजपुरी भाषा के जमीन गजल खातिर काफी ऊपजाऊ बा, ई बात तेग के बाद जगन्नाथ जी के संग्रह से पता चल गइल रहे आ सैकड़ों कवि गजल विधा में रुचि लेवे लगलें । जगन्नाथ जी अपना संग्रह के भूमिका -'हमरा अतने कहे के बा' में गजल के अर्थ, उत्पत्ति, प्रकृति, स्वरूप, क्षेत्र के व्यापकता आ शिल्प विधान पर विचार कर के समकालीन आ परवर्ती गजलकारन के मार्गदर्शन कर देले रहीं ।

समय-समय पर पत्र-पत्रिकन के जरिये जगन्नाथ जी के भोजपुरी गजल पर विमर्श आवत रहल । 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' (मार्च-सितम्बर, 1980) में 'प्रेम-भावना : भोजपुरी गजल के अंगना'; अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के राँची अधिवेशन (1985 ई.) में 'गरज गजल लेखन के'; 'पाती' के गजल विशेषांक (मार्च, 1995 ई.) में 'गजल : छोट काया, बड़हन बात' जइसन लेख लिख के भोजपुरी गजल पर विमर्श के आगे बढ़ावत रहलीं । बाकिर 1995 ई. में 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' में 'गजल : भोजपुरी गजल' शीर्षक लेख में उहाँ का भोजपुरी गजल के संक्षेप में आलोचना से पूर्ण इतिहासे प्रस्तुत कर देले बानी । कई गो गजल के किताबन के भूमिका भा पत्र-पत्रिकन में समीक्षो जगन्नाथ जी लिखत रहलीं ।

भोजपुरी गजल के विमर्श के ऊपर उहाँ के दूगो महत्वपूर्ण किताबन के योगदान के अनदेखी संभव नइखे । पहिली किताब बिया 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' । एह किताब में तीन कालखंड में बाँटके भोजपुरी गजल के आलोचनात्मक इतिहास उहाँ का प्रस्तुत कइले बानी । 'आरंभकाल' 1900 ई. तक जवना में तेग अली तेग आ उनका 'बदमाश दर्पण' (1895 ई.) के ऊपर विचार-विमर्श कइले बानी । ना खाली कथ्य, बलुक शिल्पो पक्ष पर गहिर विचार बा । 'मध्यकाल' (सन् 1901 ई. से 1960 ई.) में बेढब बनारसी, गुरु बनारसी आ विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' के गजलन पर विचार बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

'आधुनिक काल' के पहिला कालखंड (1961 ई. से 1975 ई.) में गजल लिखे वाला सक्रिय हस्ताक्षर लोग के नाम गिनावत, दिनेश भ्रमर, अर्जुन सिंह 'अशांत' आ महेन्द्र शास्त्री के ऊपर विशेष फोकस कइले बानी । दोसरका कालखंड (1975 ई. से पुस्तक लिखल जाए तक, 1996 ई.) में गजल लेखन में सक्रिय नामन के गिनावत गजल के किताब देवेवाला आठ नाम के अकारादि क्रम से आठ गजलगो लोग पर विमर्श बा त बिना किताब छपल गजल आ भोजपुरी गजल पर ओह घरी तक भइल फुटकर आ गोटगर विमर्श के सूची का साथे भोजपुरी गजल के संभावना पर भी विचार कइले बानी ।

जगन्नाथ जी के दोसर महत्वपूर्ण पुस्तक 'गजल के शिल्प-विधान' बा, जे एह विषय पर भोजपुरी के पहिला पुस्तक ह । सात अध्याय के एह किताब के पहिला अध्याय में उर्दू भाषा के विविध काव्य रूप पर विचार बा । दुसरका अध्याय में गजल विधा के आधारभूत जानकारी प्रस्तुत भइल बा । तीसर, चउथ आ पाँचवा अध्याय में गजल के छंदन पर विमर्श बा । छठा अध्याय में गजल के खूबी-खामी पर विचार कइल गइल बा । सातवाँ अध्याय में उर्दू-फारसी आ हिन्दी संस्कृत के छंदन के समरूपता पर विचार जगन्नाथ जी कइले बानी ।

'लर मोतिन के' के लगभग दस बरिस पहिले उहाँ के कवि व्यक्तित्व स्थापित हो चुकल रहे, जब 'पाँख सतरंगी' नाम से कविता-संग्रह आइल रहे । एह संग्रह में भोजपुरी कविता के विविध रूप, जइसे-गीत, रुबाई, गजल, सॉनेट, मुक्तछंद में अपना के अभिव्यक्त कइले बानी । भूमिका में प्राचार्य विश्वनाथ सिंह जी जगन्नाथ जी के अनुभति के कवि मनले बानी । 'पाँख सतरंगी' के रचनन के देखला से इहो साबित होत बा कि ना खाली शास्त्रीय छंदन, बलुक लोकधुन आ लय के ऊपर भी जगन्नाथ जी के पकड़ मजबूत बा । रितु गीतन में लोकधुनन के प्रयोग उदाहरण बा ।

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के दोहा विशेषांक में उहाँ के द्वारा दोहा के सरूप आ प्रकार पर चरचा, आ उहें के संपादन में निकलेवाली पत्रिका 'कविता' के विषय गंभीर संपादकीय जगन्नाथ जी के काव्यकला आ सौंदर्य का ज्ञान के प्रमाण प्रस्तुत करत बा । एगो अउर काम जे जगन्नाथ जी कइले रहीं आ पूरा मनोयोग से कइले रहीं, के चरचा इहाँ जरूरी जान पड़त बा । लगभग अठारह हजार मुहावरन के संग्रह उहाँ का कइले रहीं । पुराना से पुराना आ नया गढ़ा रहल मुहावरन का प्रयोग साहित्यकार लोग के किताबन आ

www.bhojpurisahityangan.com

रचनन से ।

उदाहरण खोज के पांडुलिपि तैयारी में लागल रहीं जगन्नाथ जी । राँची में ऊ पांडुलिपि हमरा देखे के अवसर मिलल रहे । बाकिर एने फोन पर ओकरा प्रकाशन खातिर एक दिन जानकारी मँगनी त उहाँ का बतवनी कि मकान बदले के क्रम में ऊ नष्ट हो गइल । जान के बहुत पीड़ा भइल ।

आज लगभग पचासी बरिस के अवस्था में भोजपुरी साहित्य के साथ जीये वाला जगन्नाथ जी के प्रति उहें के पाँतियन के प्रस्तुत करत ई कामना करत बानी कि उहाँ के हमनी के राह देखावत जाईं :

सभका से सुर रहल अलग, मस्ती में गवलीं
भँवरनके गुन-गुन के कायल ना रहलीं हम
आन्हीं बान्हि हहास चलल कतनो हमरा पर
भरि हियरा में जोस जवानो के थहलीं हम
परबत के चट्टान रहल हरमेस बसेरा
परिचय अतने, जीवन अगम राह के डेरा

-मुजफ्फरपुर
मो० : 9905030520

❖❖❖

गजल-संग्रह के सृष्टि से लेके प्रकाशन तक के उत्स में एके व्यक्ति के योगदान रहल बा, जे हमार प्रेरणा-स्रोत रहल बा यानी भोजपुरी-गज़ल के राजकुमार कविवर जगन्नाथ जी । हम ई आपन कृति ओही कविमनीषी के हाथ में ई कहत अर्पित कर रहल बानी- त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।

[कृष्णानंद 'कृष्ण', गजल-संग्रह 'नया सूरज चढ़ल जाता' आत्मकथ्य 'हमार कहनाम' में]

www.bhojpurisahityangan.com

जगन्नाथ जी आ गजल

-डॉ. शारदा पाण्डेय

कर्म जब धर्म बनि जाला, त सक्रियता साधना के ओह आयाम के ओर आकर्षित होले जेकरा से साधके ना, समाज के भी कल्याण होखो । ई चिन्तन के दृष्टि व्यक्तिपरकता से हट के समष्टि के ओर अनासे विस्तृत हो जाले । श्री जगन्नाथ जी के जीविकोपार्जन वृत्ति भारतीय डाक-तार विभाग से जुड़ल, बाकिर मन के तार 'गजल', कविता, गीत से अइसन जुड़ल कि साँस-साँस में ओकर ध्वनि-गमक समा गइल । 'लर मोतिन के' ऊहाँ के पहिली प्रकाशित रचना हऽ, जवना से गजल के प्रति अद्भुत आसक्तिमय नशा के स्वीकारोक्ति भइल-

'मिलल कुछ एह तरह के रस नसा पिअले चढ़ल हमरा
भइल ई हाल अब खाली लिखत-गावत गजल बानी ।'

गजल के पूरा व्याकरण के सम्हारत, सजावत इहाँ के ओकर मूल भावना वर्ण्य विषय प्रेम के मानत कहले बानी कि, 'साँच पूछीं त गजल मन के भावना आ प्रेम के कामना के अभिव्यक्ति हऽ । एकरा में रचना करे के पीछे ईहो भाव बा कि गजल के नाँवे में मिसिरी मतिन मिठास बा, गुलाब अइसन गमक बा, सुबास बा, आ ई उर्दू काव्य के सबसे जनगर आ पनिगर रूप हऽ ।'

प्रेम के प्रारम्भ प्रायः आकर्षण से, विकास भावनात्मक स्वजन के बिनावट से आ अंत समर्पण के एकलयता से होखेला, बाकिर कबो-कबो अंत के लहर निरंतर जाग्रत वियोग के पीड़ा-कसक-छटपटाहट में समाहित रहेला-

'सुधियन के दाह जब कबो सजोर हो गइल ।
जियरा के पीर पघिलि-पघिलि लोर हो गइल ।।'

प्रेम के गायक प्रिय के याद के लोर के गंगा जल से नहवावत रहेला ईहे ओकर इनाम हऽ-

अतना जुगुति से रखली जोगा के केहू के याद ।
दूइ ठोप लोर आँखि का इनाम मिलि गइल ।।

जगन्नाथ जी के प्रेम के एक-एक धागा, अनुभव गजल के अच्छर-अच्छर में अइसन बिनाइल-समाइल बा कि ओकरा के अलगिआइ के देखल सम्भव नइखे बुझात-

www.bhojpurisahityangan.com

'चोट हियरा प जे करे अचके ।
कुछो ना अउर, ऊ गजल बाटे ।'

चाहीं ना चाहीं, गजल के धार अइसन बा कि जवन बा ऊ बेकहले रहाई ना–

'हिया में पीर बरमहल बाटे ।
ई हमार मन बेकहल बाटे ॥'

काहें कि प्रेम के गहराई के आजु तलक केहू थाह नइखे पवले–

'दिन भइल राति, रात भइल दिन, ना भइल सेस ।
कइसन ई कथा नेह के जेकर ओर ना छोर ॥

ई प्रीति के दरद 'अँसुवन' से सिंचाइल बा आ ओही के राग में जिनिगी के कुल्ही भाव गुनगुना जाला–

'दरद के दिल में दुलारी, नयन में अँसुवन के ।
गीत गाईं, इहे किस्मत के बा मंजूर भइल ॥'

पढ़ते मीरा के 'अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई' के इयाद आ जाता, बुला कुल्ही प्रेमिका-प्रेमी के साँस-भाव लोरे में सनाइल बा । हृदय में पीर जब सींझि जाला, तब नयन से नीर पसावे लागेला । ई प्रतीक प्रेम के दाह, परिपक्वता, परिणाम आ आश्वस्ति के कतना सघन अभिव्यक्ति करऽता ई मौलिक तऽ बड़ले बा अद्भुतो बा, देखे जोग बा–

'पीर हियरा में बुला सींझि गइल ।
नयन अब नीर के पसावता ।'

जगन्नाथ जी गजल में ना जाने कतना अइसन प्रस्तुत बिम्ब देके ग्रामीण आ गृह-परिवेश से आपन लगाव व्यक्त कइले बाड़न । एगो बात कहला बिनु मन नइखे मानत कि उनुका माशूका के ना चूड़ी के खनक सुनाता, ना कँगना के झलक झलमलाता, ना पायल के झनक इयाद आवता; ना कतो बिहारी के अइसन 'कहत, नटत रीझत खिझत' के मुद्रा, भंगिमा, नेत्र के कटाक्ष लउकता । बाकिर इयाद के मन में लुकाइल झोंका पीर के टभकन के साक्षी तऽ बड़ले बा ।

जगन्नाथ जी के गजल आ प्रेम-गीतन में अप्राप्ति के टीस प्रायः सभतर लउकता, बाकिर ओमे मिलन के उछाह कतो नइखे झलकत । अनामी प्रिय के बुझाता, आँखिये से कतो घाव भेंटाइल बा, संयोग के सुखद क्षण नइखे भेंटाइल । अधिकांश अइसन गीत-कविता आ गजल में अनुभूति गहन,

www.bhojpurisahityangan.com

भाव सघन, बाकिर प्रीति के आधार-पट में विभिन्न भाव-प्रसंगन आ दृश्यात्मकता के विधान विरल बा । रचनाकार खातिर ईहो एगो वरदान बा कि वैयक्तिक पीर में सउनाइल मन अवसाद में नइखे डूबत, ऊ सामाजिक, व्यावहारिक, राजनीतिक परिदृश्य के यथार्थ स्वरूप के मूल्यांकन कइ पावता । ई अपना आप में मानवीय संवेदना के प्रति प्रतिबद्धता के प्रमाण बा । 'खुद के तलाशत' संग्रह में एह भावनात्मक परिवर्तन के अनेक बानगी लउकता । शिष्टाचार में हाथ मिलता, बाकिर दिल मिले के त सदाशयता अलोपे हो गइल बा-

'हाथ से हाथ मिल जा, ईहे बा बहुत ।
दिल से दिल के मिले के चलन उठ गइल ।'

ऊपर से सज्जन, आकर्षक देखाई परे वाला व्यक्ति भीतर से कतना क्षुद्र आ स्तरहीन, अविश्वसनीय बा, दूगो मिसरा में कहा गइल बा-

'रूप बाटे सोनहुला ।
दिल मगर पितरिया बा ॥'

सामाजिक व्यवहार के नियम हऽ कि सामने वाला के मन के अनुसार आचरण करऽत सफल व्यक्तित्व कहाई, ना तऽ आपन अलगा विचार-व्यक्तित्व राखे वाला लोगन के आँखि में गड़ल करी-

'खेलवना हाथ में केहू के ना सपनो में हम बनलीं ।
एही से आँखि में सभका मजिगर गड़ल बानी ॥'

मित्र-अमित्र के पहिचानो अइसन घड़ी में होखेला, जब अदिमी कवनो-ना-कवनो सकेता में परल रहेला-

'जिनिगी प बहुत पीर के एहसान हो गइल ।
दोस्ती के, दुस्मनी के पहचान हो गइल ॥'

एह शेर के सहजता, सरलता आ स्पष्टता रहीम दास के दोहा के मन परा जाता-

'रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ॥'

अपना जीवन के अनुभव के गजलकार अतना यथार्थ रूप में सोझा राखता कि ई अनुभव सभकर आपन हो जाता । कतना मुखौटा, देखावटीपन बा ई अवरू कवनो योनि में ना लउकी; ई विशेषता त खाली अदिमिए में बा-

'काट जो ली, त ना लहर आई ।
आदमी जात हऽ, चिहाईं जनि ।'

-खुद के तलाशत

www.bhojpurisahityangan.com

छोट-छोट बात कब वैमनस्य के खाई बढ़ा दी, ई आजु काल्ह के लोगन के असहिष्णुता के चित्र खींच देता-

'मन के गुरही जबान तक पहुँचल ।
बात उघटापुरान तक पहुँचल ॥'

xx xx xx

बात जे लागल, खाली लागल ना ।
मान-सम्मान, आन तक पहुँचल ॥'

मानवीय सहयोग-सहायता के भाव लोगन के मन में नइखे आवत, ऊ खाली दर्शक, भीड़ बनि गइल बा-

'सड़क पर मर बा रहल छटपटात ऊ, बाकिर ।
केहू ना भीड़ से निकलल बचाव में आइल ॥'

जगन्नाथ जी गजल में प्रतीक के बड़ा महत्व देनी आ प्रतीको अइसन, जवना में 'महीनी' होखो । अइसन कि भाव दूर तक जाउ । आज के जवन वातावरण बा, तनाव बा, असुरक्षा बा, अविश्वसनीयता आपुस के व्यवहार में कील ठोक देले बा, ओकर एगो प्रभावशाली भावांकन एजू देखीं-

'कली-कली प जे होता इहाँ-उहाँ हमला ।
चमक अवाक बगावत के भाव में आइल ।'

एह में राजनीति, साम्प्रदायिक अलगाव आ केरली ज़िहाद अइसन ध्वनि अनासे पइसल लउक जाता । का जाने कवि के का कहे के मन्सा बा ; 'खुद के तलाशंत' के उनसठवीं गजल गजलकार के समाज, वातावरण, सियासत पर पड़े वाली सूक्ष्म-बेधक दृष्टि के प्रबल प्रमाण बा । विवशता कइसन बा कि 'आदमी आदमी से जरल/ आदमीयत दफन हो गइल ।' एसे 'चुप ही रहला में बा खैरियत' काहें कि अनुभव हो गइल कि सभे एके रंग में रंगा गइल बा 'पास ईमान बा केकरा / सब बा एक बरन हो गइल ।'

देश के हवा में अइसन बदलाव आवत जाता कि ओजू 'बिक रहल बाटे ईमान' जिन्दगी के खाली 'दर्द, दहशत, उदासी, फजीहत मिलल ।' अइसना में देश के उन्नति-विकास के चाह कहाँ जाइके खड़ा हो जाता- 'देश के जगमगावे के बा इरादा / लोग के हाथे इहँवा लुकार बाटे ।' सपना से, खूँख चाह से ना अदिमी उठी, ना देश । काहें कि भ्रष्टाचार आ महँगाई विकास आवे नइखे देत, ऊ हर कदम-मोड़ पर डँसे के तेयार बा 'गम के खाईं आ जीहीं, बा जबले उमर / अब महँगाई नागिन के फन उठि गइल ।'

www.bhojpurisahityangan.com

हर गजल जियतार यथार्थ के टीस, कसमसाहट के कथा कहता । गजलकार देश के सोन्ह माटी के भुला नइखे पावत, एह गिरगिटाह नगरी जीवन आ आदमीयन के भीड़ से आदमीयत के लोप होत वातावरण में ओकर साँस उजबुजा जाता । अपना गाँव के भुलावल कठिन बा-

'लाख चहलो पर बसलीं ना हम गाँव में ।
गाँव हमरा में, बाकिर, बसल रह गइल ।।'

काहें कि आगा बढ़े के चाह शहर में ले आइल, बाकिर आत्मीयता ग्राम्य जीवन के सरलता भुला गइल-

'आँख में बसल शहर, लेकिन ।
गाँव पइसल परान में बाटे ।।'

विकास के कुल्ही नारा, सपना बिला गइल एह आन्ही में 'कुछ ना गँवई-गिरान तक पहुँचल ।' बुझाता कि ई लुकार अब आसमान तक चहुँपी-

'ढेर रउँदा चुकल बिया धरती / अब त आकाश के पारी बा ।' ई आदमी हऽ, जेकर बदलत स्वरूप के आकलन आज तक केहू ना कइ पावल-

'कबो भगवान हो जाला, कबो शैतान हो जाला ।
गजब के बात बा, इन्सान ई इन्सान ना होला ।।'

अतना जनलो-बुझलो पर कवि के मन में कवनो निराशा-हताशा नइखे, अपना गजल-गीत से लोगन के अँजोर-सुर बाँटत अपना जीवन के अन्हरिया के अपने आशा-साहस के दीआ से प्रकाशित करऽता-

'सफर में अन्हारा के फँसलीं ह हम जब ।
दिया खुद ही बनलीं ह, जरलीं आ बरलीं ।'

जगन्नाथ जी के भोजपुरी गजल के गम्भीरता, अभिव्यक्ति, व्यंग्य आ तेवर देखि के गजल के राजकुमार दुष्यंत कुमार के याद आ जाता । साँचो, गजल के मिठास, सुवास से गमगमाइल रचनाकार के ई कहल सार्थक बा कि 'खोज लीं घर-दुआर भा आँतर / हमरा पासे त बस गजल पाइब ।'

एही नशा के परिणाम भइल कि रचनाकार 'गजल के शिल्प विधान' 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' अइसन गम्भीर रचना से भोजपुरी के श्रीवृद्धि करे में सशक्त भूमिका निबहले । एह संदर्भ में एगो विशेष मौलिक प्रयोगात्मक अवरू कृति सोझा आइल 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद ।' ई निश्चिते लेखक के कठिन अध्यवसाय, गम्भीर अध्ययन के

www.bhojpurisahityangan.com

प्रमाण बा । बाकिर प्रश्न उठता कि का रउआ जगण-तगण आदि के छंदीय व्याकरण के शास्त्रीय उर्दू-हिन्दी के समालोचक स्वीकार करी ? गजलकार जगन्नाथ जी के रचनात्मकता एकांगी ना, बहुपक्षीय बा । 'पाँख सतरंगी' गीत रचना ह, जवना में ऋतु, किसान, उत्सव, युगबोध, देशप्रेम, जीवन के विविध अनुभव के कोमल मधुर, चित्रात्मक वर्णन बा तऽ कथा-संग्रह 'बाँचल-खुचल' में समाज के विविध रूपात्यकता के यथार्थ वर्णन बा, इहाँ तक कि नाटक के क्षेत्र में भी 'सात रंग' के रचना कइके इहाँ के भोजपुरी साहित्यकारन में शीर्षस्थ स्थान पवनीं । जगन्नाथ जी के प्रतिभा के धार शतधा भावोन्मुखी बा । बाकिर मुख्य विश्रुतता गजलकार के रूप में बा । गजले इनकर लेखन धर्म-कर्म आ जीवन-रस हऽ ।

अँजोर सहृदयता के :

कबो-कबो कवनो पल भा घटना मन में अइसन ठहर जाला कि ओकरा के भुलावल कठिन हो जाला आ साँच कहीं, तऽ इ संवेदना के प्रति अन्याय होखेला ओकरा के ना स्वीकारल ।

खालिस कविता पर आधारित पत्रिका के निकालल भोजपुरी खातिर एगो साहसिक आ निरंतर प्रयत्न-साध्य प्रयोग रहल, जवना के दशाब्दी ले अधिका जगन्नाथ जी चलवनीं । एह माध्यम से अनेक नया-पुरान-प्रसिद्ध अनाम कवियन के सोझा ले अइनी । कपिल जी के माध्यम से हमरो 'कविता' से परिचय भइल आ अनेक रचना प्रकाशित भइली सन् । एक बेर इहाँ से दूरभाष पर बात भइल त कहनी कि रउआ निःसंकोच लिखत अ भेजत रहीं, काहें कि 'राउर कविता मौलिके ना, सकारात्मकता से प्राचीन कथा-प्रसंगन के उभारे वाली बा ।' हमार साहस बढ़ल । एगो लमहर कविता 'भरबित्तन' भेजलीं त सालभर तक कुछ सूचना ना मिलल । रहि ना गइल त पुछनी । जबाब मिलल, 'का करीं कवनो पत्रिका अतना बड़ कविता के छापे के तेयार नइखे, आ हमार 'कविता' चउबीस पेज के बिआ, ओकरा में कइसे छापीं ? एकरा के खण्ड-खण्ड छापलो ठीक नइखे लागत, काहें कि भाव टूटि जाई । तनी धीरज राखीं, कविता सम्हार के धइले बानी, एकरा के संयुक्तांक में हमहीं छापब ।' ईहे भइल, कविता के अंतिम संयुक्तांक में 'भरबित्तन' छपि गइल । एह भाव-निष्ठा से हमार मन भितरे-भीतर कृतज्ञता-आदर से भरि गइल । बाकिर धन्यवाद के अलावा हम कुछ ना दे सकनी ।

एक दिन श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी जगन्नाथ जी पर विशेषांक

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन के सूचना देत कुछ लिखे के कहनी त एह दूगो घटना के अलावा हमरा लगे जगन्नाथ जी से संबंधित कुछ ना रहल । हम जगन्नाथ जी से खाली अतने कहनी, 'रउआ त बहुत कुछ लिखले होखब, बाकिर हम त कुछ नइखीं पढ़ले ।' जगन्नाथ जी कहनी कि 'अपना सामरथ के अनुसार घर-परिवार सम्हारत जवन कुछ कइ पवनी, रउआ उत्सुकता बा त भेज देब ।'

आश्चर्य भइल कि उहाँ के साँचहूँ आपन रचना भेजनी सहज भाव से, बिना कवनो स्वार्थ के । हमार मन फेरु भावाभिभूत हो गइल कि ई सरलता आ सहृदयता अब कहाँ मिली ? हमरा त एकर विपरीत अनुभव मिलल बा । एगो भोजपुरी के रचनाकार हमरा कवनो निबंध, संस्मरण के पढ़ि के प्रभावित भइले, फोन कइले आ अवरू कुछ पढ़े के चहलन त हम आपन रचना भेजि दिहनी । ऊ कहलन कि हम आपन किताब रउआ के तुरंते भेजब । फेरू कहनी कि हम एगो किताब लिखतानी, ओकर भूमिका रउअे लिखे के बा । फेरु भइल कि हम दू बेर रउआ के किताब भेजनी, मिलल कि ना ?' हम कहनी कि 'ना' । जबकि सच्चाई बा कि हमार पोस्टमैन हमार सामग्री देबे में बड़ा विश्वसनीय हऽ । एक दिन फेरु फोन आइल कि हमरा घरे जनेऊ में आईं । हम आपन किताब रउआ के दे देब ।' हम चकित भइनी, ओकरा बाद फोन ना आइल । दोसर सज्जन कहले, 'भेजे में खर्चा लागेला जी ।' जबकि हमार कुल्ही दू-दू बेर मँगवले, आग्रह सहित ।

अइसन सज्जनता देखला के बाद जब हम जगन्नाथ जी के सहृदयता-उदारता देखनी कि आयु से अतना वरिष्ठ व्यक्ति, रिटायरमेंट के बादो बिना कवनो लाभ-लोभ के पूरा किताब के बंडल पोस्ट कऽ देलीं, त ओकरा प्रति खाली आदरे ना, श्रद्धा के भाव अनासे जाग जाता । पूरा जीवन लेखन के समर्पित, समाज के जागृत करे के प्रयास करत जवन रचनाकार अठासी बरिस के उमिर में भी बात के पक्का, स्वाभिमान आ सच्चाई के स्वीकारत जी रहल बा, ऊ आजु के पीढ़ी खातिर उदाहरण आ ज्योति-स्तम्भ बा । एह सहृदयता के हमार अभिनन्दन !

142, बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्,
प्रयागराज-211006 (उ.प्र.)

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

गीतकार जगन्नाथ के गजलगोई

-रामनिहाल गुंजन

गीतकार जगन्नाथ एगो सेसर साहित्यकार रहल बाड़े, जेकर भोजपुरी के पहिलका गीत-संग्रह 'पाँख सतरंगी' के प्रकाशन 1967 में भइल रहे आ जेकर भूमिका लिखत प्रो. विश्वनाथ सिंह एह बात का ओर संकेत कइले रहले कि "भोजपुरी के भावुक, कल्पनाशील, सुकुमार गीतकार जगन्नाथ का पाँख सतरंगी का सहारे पाठक के भावुकता कहाँ-कहाँ उड़ि के जाई, एकर अनुमान कइल कठिन बा । अतना हम जानतानी कि जगन्नाथ का कल्पना के पाँख बहुत कोमल हवन स, आ एह पाँखन के रोमिल कोमलता का भीतर से एगो रोशनी फूटि रहल बा, एगो आभा निखरि रहल बा । हमरा ईहो पता बा कि एही पाँख सतरंगी में आकास के अनेक रंगन के साथे-साथे माटियो के रंग बा । माटी के रंग रउरा सभे जानीला, उजियार भा चटकार ना होखे; बाकिर ओकरा धूसरता में एवं रंगन के पचा के नया सिरजन अँकुरावे के क्षमता होले । (पाँख सतरंगी के भूमिका-पृ.1) ।

19 जनवरी, 1934 के बक्सर जिला के कुकुढ़ा गाँव में जनमल कवि-गीतकार जगन्नाथ जी के लेखन के आरंभ हिन्दी-भोजपुरी कविता से भइल रहे । जगन्नाथ जी एगो सजग साहित्यकार बाड़े, जेकर कविता, गीत आ कहानी में सहज-सरल आ रसगर अभिव्यक्ति देखल जा सकेला । प्रो. विश्वनाथ सिंह के ऊपर लिखल टिप्पणी में जगन्नाथ जी के जवन कल्पन के पाँख के चरचा भइल बा, ओकर महत्व त बड़ले बा, साथे-साथे एह बात के भी अहमियत बा कि जगन्नाथ जी जवन माटी आ जमीन से आजीवन जुड़ल रहले, ओकर गंध उनकर गीतन आ गजलन में बराबर व्यंजित होत रहल बा । उनकर लिखल गीतन में, जे 'पाँख सतरंगी' में संकलित बाड़े स, जादातर तबाही, पीर, दरद के धार, हार, आदि के चित्र उकेरल गइल बा । एक बात एह से साबित होता कि जवन हिन्दी भा भोजपुरी गीतन के परंपरा रहल बा, ओकरा में विरह-वेदना, पीड़ा, करुणा आ पराजय के भाव प्रमुख रूप से व्यंजित होत रहल बा, एक तरफ अंग्रेजी के कवि शेली के उदास गीतन के मधुरतम मानके एह दिसाईं ओकर महत्व प्रतिपादित कइल गइल बा, त दोसरा तरफ मनभूति के 'एको रस : करुणमेव' -कहनाम के प्रमुखता देत

www.bhojpurisahityangan.com

खानी हिन्दी भा भोजपुरी गीतन में एह तरे के भावन के पसन्द कइल गइल । आपन परंपरा से प्रभावित भइला के कारण जगन्नाथ जी के गीतन में भी ओह तरे के भाव स्वभावत: व्यंजित हो सकल बा, एह में संभावना जादा बुझाता । अइसे त जगन्नाथ जी आपन जीवन के शुरुआती दौर के गीतन में एह तरे के भावन के वोजह से चर्चित भी भइले । ओह समय के काव्य-मंचन पर भी अइसने गीत पसन्द कइल जात रहे । एहसे कहल जा सकेला कि शुरू में जगन्नाथ जी के एह तरे के गीतन के एक प्रकार से धूम मचल होई । ओह तरे के भाव व्यंजित करेवाला गीतन के कुछ पंक्तियन के तत्काल देखल जा सकेला-

हईं हम त अइसन डहरिया के राही ।
मिलल डेगे-डेगे प हमके तबाही ॥

xx xx xx

हिया में बसल पीर अँखियन में पानी ।
रहल भर उमिरिया के ईहे कहानी ॥

बाद में जगन्नाथ जी के गीतन के भाव में बदलाव आइल आ ऊ आपन गीत गावत ई अनुभव कइले कि -'हईं जा भारत के सन्तान ।' अइसन गीतन में राष्ट्रीय चेतना के भाव व्यंजित भइला का बाद देस के आजाद भइला के खुशी आ स्वाभिमान भी पैदा भइल -'मालूम बा सभका दुनिया में हमनी के प्रभुताई ।' अइसने माहौल में कवि जगन्नाथ जी के लेखन के विस्तार भइल । ओइसे त उनकर लेखन के प्रारंभ 1958 से हो चुकल रहे, बाकिर प्रौढ़ि के निकष पर ओकरा कसाय में समय लागल आ 1967 के पहिले तक उनकर गीतन के चरचा भी शुरू होखे लागल रहे । बाकिर उनकर गीत आ गजल के क्रमिक विकास थम्हल ना, बलुक आगे बढ़ते गइल । 'पाँख सतरंगी' के उनकर सेसर गीतन के अगर जायजा लिहल जाय, त नीचे देल गीत-पंक्तियन के गुनगुनावे के भी मन करी-

1. **घरे-घरे पहुँचल सनेसा बयार के ।**
   आइल दिन बिहँसत बसन्ती बहार के ॥
2. **भरि जाला अँखिया सपनवा, हो राम,**
   चइत महिनवाँ ।
3. **बिहँसि रहल भिनुसार चइत के ।**
4. **नेह-सनल माटी का अजगुत सिंगार के ।**

www.bhojpurisahityangan.com

आइल सखि, आइल दिन बरखा-बहार के ॥

5. भइल नील आसमान, टहकलि अँजोरिया ।
नहा गइल दूधे नगरिया-बथरिया ॥

6. खनकल कँगनवा अँगनवा में धरती के ।
कटनी के आइल बहार ॥

जगन्नाथ जी गीत के अलावे रुबाई आ सॉनेट पर भी कलमे चलइले बाड़े, बाकिर संख्या में ऊ अतना कम बा कि ओकर चरचा कइल अभी जरूरी नइखे बुझात । उनकर दूसर संग्रह गजल के बा जे 'लर मोतिन के' नाँव से 1977 में छपल रहे । चूँकि गजल एगो संवेदनशील विधा ह, जेकरा में भाव-बोध के व्यंजना थोड़ा कठिन, मगर चमत्कारिक होला । एह बाबत जगन्नाथ जी के आपन विचार ई बा कि "गजल के मिजाज आ एकर बनावट बड़ा नाजुक होले । तनिको बेलूरापन गजल से बरदास ना होखे । एकर आत्मा आ सरीर दूनों का सुन्नर सुभेख आ सोभनउक होखेके चाहीं । दूनों में से कवनो एको दब भइल त गजल बेदम हो के रहि जाले । गजल के भाषा का मीठ आ कसल (कम्पैक्ट) भइल जरूरी होला । भाषा जतने मीठ होई, जतने कसल होई, गजल ओतने जानदार होई, आबदार होई । जवना भाषा में मिठास नइखे, कसावट (कम्पैक्टनेस) नइखे, ओहमें अउर कुछ लिखा जाउ, बाकिर गजल ना लिखा सके । मीठ-सरस शब्दन के चुनाव आ ओहनी के नगीजा-मतिन जड़ल-मढ़ल गजलकार के सफलता के आधार होला ।' जगन्नाथ जी के एह बातन से इनकार आ असहमति ना हो सके, एतना तय बा, बाकिर एकरा में एगो आउर बात जोड़ल जा सकेला आ ऊ ई कि गजल में रवायती (परम्परित) के बजाय जदीद (आधुनिक) भा तरक्की-पसंद (प्रगतिशील) कंटेट के भइल जरूरी बा, एहसे कि आज के जीवन जटिल आ समस्यापूर्ण हो गइल बा । ओहमें 'भय', 'साकी' आ 'सागर' कहला से काम नइखे चले लायक । जगन्नाथ जी के गजलन में भी एह बात के जायजा ले लिहल जरूरी बा कि ओह में अपना समय के कइसन चित्र उकेरल गइल बा । ओइसे त जगन्नाथो जी परम्परित गजल के रचना कइले बाड़न । ओह दौर में, जबकि उर्दू ग़ज़ल के बोलबाला रहे, परम्परित गजल के जादा प्रचलन भइला का वोजह से केहू गजल लिखेवाला खातिर ऊहे यानि रवायती भा परम्परित गजल कहल जादा सहज रहे । एहसे जगन्नाथ जी भी अगर ओह प्रभाव में आके ओह तरे के गजल के रचना कइले, त ओकरा के अस्वाभाविक

www.bhojpurisahityangan.com

ना कहल जाई । दूसर बात ई कि भोजपुरी में गजल लिखल एगो नया विधा के आरंभ कइल रहे । भोजपुरी में गजल लिखे के परंपरा कब से शुरू भइल, एह बाबत जगन्नाथ जी मौन बाड़े, बाकिर भोजपुरी में गजल लिखल भाषा के कसौटी के अनुकूल रहल बा, एकर जिकिर करत ऊ कहत बाड़े कि "गजल खातिर भाषा के जे कसौटी बा, ओकरा पर एकदम खरा उतर रहलि बा । मिठास आ कसावट (कम्पैक्टनेस) त भोजपुरी में कूटि-कूटि के भरल बा । एहसे भोजपुरी में गजल बहुते साफ-सुघर आ अपना प्रकृत रूप में आवत बा ।" ('लर मोतिन के' भूमिका-पृ.8) ।

चूँकि जगन्नाथ जी 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छन्द' आ 'गजल के शिल्प-विधान' जइसन किताबो लिखले बानी, जवना से समुझल जा सकेला कि ऊहाँ के गजल विधा में लिखे के साथे-साथे ओह पर चिन्तन-मनन भी कइले बानी । जहाँ ले भोजपुरी गजल के बात बा, ऊहाँ का भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा पर भी अच्छा काम कइले बानी । एही से भोजपुरी भाषा के गजल के अनुकूल माने में कवनो दू राय ना हो सके ।

जइसन कि ऊपर चर्चा हो चुकल बा, जगन्नाथ जी के गजलन के जायजा लेवे के सिलसिला में एक बात आउर गौरतलब बा आ ऊ ई कि जगन्नाथ जी 'लर मोतिन के' में संकलित गजलन के अलावा जवन लिखले बाड़े, ओकर संख्या भी जादा नइखे । 35 गजलन के संग्रह 'लर मोतिन के' अलावे उनकर लिखल गजल जादातर उनका संपादन में प्रकाशित होखेवाली पत्रिका 'कविता' में छपल बा । एह तरे कुल मिला के 70-80 गजलन के उपलब्धता के बावजूद जगन्नाथ जी के गजल के अभी ले समुचित मूल्यांकन नइखे हो सकल । दरअसल भोजपुरी में आलोचक भा आलोचना-साहित्य के कमी भइला का वोजह से अभी ले ई काम नइखे हो सकल । जे लोग आलोचना लिख रहल बा, उनकर भी एह दिसाईं कवनो प्रयत्न नइखे दिखाई पड़त । बहरहाल जगन्नाथ जी के गजलन के प्रारंभिक दौर पर, गौर कइला से ई बात जरूर साफ हो जाता कि शुरू के गजल परम्परित किस्म के बा । कुछ बानगी के तौर प पेश बा-

1. **दरद के दाह जब सुधि के सयान हो जाला ।**
   जिन्दगी से बहुत उघटा-पुरान हो जाला ॥
2. **भुला के गीत कबो नेह के कढ़ा दीला ।**
   बात तनिकी मगर मुदई जहान हो जाला ॥

www.bhojpurisahityangan.com

3. इन्सानियत के भाव गिर गइल बाजार में ।
रस्ता भुला गइल अँजोर के अन्हार में ॥

4. जिनिगी का जिये के अलम, सरंजाम मिल गइल ।
हमरा के पिये के दरद के जाम मिल गइल ॥

5. हहरत हिया में पीर के पोसल फरज हमार ।
रचि-रचि के गीत सभ के सुनावल गरज हमार ॥

एह तरे देखल जाव त जगन्नाथ जी के गजल में नया मोड़ आवेके पहिले के स्थिति साफ हो जाई । एही संग्रह में उनकर कुछ नया आ आधुनिक भाव बोध के गजल भी बा जवना में से दू-चार गो उदाहरण काफी होई । गौरतलब ई बा कि दुष्यंत कुमार आपन गजल लिखे के दौरान महसूस कइले कि उर्दू भा हिन्दी गजलगोई में 'पीर' यानि 'दरद' के जिकिर काफी हो चुकल बा एही से उनका लिखे के पड़ल -'पीर पर्वत हो गई है अब पिघलनी चाहिए ।' ओइसे त जगन्नाथो जी के महसूस भइल होई कि परम्परित गजलगोई के बजाय जदीद गजल लिखे के चाहीं । साइत ओकरे ई नतीजा ह कि जगन्नाथ जी के गजलगोई में आधुनिकता के प्रवेश भइल । कुछ बानगी देखल जाव-

1. दहसत समा गइल बा लोगन में अजब आजु ।
बइठल बा सभे ठोकि के मन का किवार के ॥

2. जिन्दगी लाख बेरहम होखे ।
सटीं पँजरा मयार हो जाई ॥

3. कवना उमेद पर बसीं तूहीं कह इहाँ ।
लुटत बा लोग एक-दोसरा के जहाँ चीर ॥

4. सउँसे सहर के लोग बा हतास आ उदास ।
मौसम के मन तनी जे अनमनाह हो गइल ॥

अगर जगन्नाथ जी कोसिस कइले रहते त आउर आधुनिक शैली के गजल लिखले रहते, बाकिर बाद के गजलन में जवन मोड़ आइल ओहू के आकस्मिक ना कहल जा सके । एगो संवेदनशील गजलकार के रचना पर बदलत समय आ समाज के प्रभाव जरूरे पड़ी, एतना तय बा । जगन्नाथ जी के बाद के भोजपुरी गजलन प ई असर देखल जा सकेले जे 'कविता' के अंकन में छपल बा । दरअसल कवनो रचना में समय के अनुसार उकेरल चित्र ओकरा के प्रासंगिक बनावे में सहायक होला, जवना से नया भावबोध के

www.bhojpurisahityangan.com

जनम होला । कुछ गजल के पंक्तियन से ई बात साफ हो जाई-

1. **गाँव जाईं त जाईं कइसे हम ।**
   खेत-खलिहान से डर लागत बा ॥
2. **चल रहल अस विकास के आन्ही ।**
   कुछ ना गँवई-गिरान तक पहुँचल ॥
3. **बात अइसन लिखीं कि वक्त कहे ।**
   शायरी बेजबान तक पहुँचल ॥
4. **गाँव-शहर कतहूँ गइलीं ।**
   रातो भर ना आँख सटल ॥
5. **मुखवटा लगवले सभे लोग बइठल ।**
   कहाँ केहू बा मुँह देखावे के काबिल ॥

ऊपर के उदाहरण से जाहिर बा कि अभी देस आ समाज में असुरक्षा के माहौल पैदा हो गइल बा आ लोग दहशत में बाड़े । दूसरा तरफ विकास के जोर बा, बाकिर विकास कहीं दिखाई नइखे पड़त । आज जरूरत बा देस में जन-जागरण फैलावे के । समाज आ देस में हिंसा, लूट आ अत्याचार के माहौल गरम बा । अइसन हालत में सुरक्षा, शांति आ सुख-समृद्धि के कल्पने बेकार बा । स्थिति एतना भयावह हो गइल बा कि आदमी आदमी से डर रहल बा । जगन्नाथ जी एगो चौपदा में कहले बाड़े-

का पता, कब आदमी का आदमी से ।
भेंट हो जाय, डर बनल बा ॥

एह तरे के भाव के व्यंजित करेवाला गजल, गीत भा चौपदा जगन्नाथ जी के एने के समाज-चिंतन के नतीजा ह । एह से उनकर कवि-कर्म के विकास के भी सूचना मिल रहल बा । एह माने में देखल जाय, त जगन्नाथ जी के समग्र रचना-शीलता के अभिप्राय भी समझ में आ जाई । कहल जरूरी नइखे कि जगन्नाथ जी के साहित्य-साधना के ई स्वर्णकाल ह, जेकरा में उनका से आउर सेसर गजलन के रचना के अपेक्षा कइल मुनासिब होई ।

-नया शीतल टोला, आरा (बिहार)
मो० : 7250201038

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी-गजल के आधार-स्तंभ

-डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

जब एगो अभियन्ता के अँगुरी के स्पर्श से हिन्दी-भोजपुरी साहित्य के विविध विधा में रचना के अल्पना सजल, त बरबस एगो महान साहित्यकार के इयाद ताजा हो गइल । बेल्जियम के एगो इन्जीनियर राम-कथा से प्रभावित होके भारत आके संस्कृत आ हिन्दी सीख के कालान्तर में राम-काव्य आ तुलसी साहित्य के जानल-मानल विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित भइलें । जगन्नाथ जी मूलत: एगो अभियंता बाड़ें, बाकिर साहित्य-सृजन के क्षेत्र में कुशल रचनाकार का रूप में उनकर योगदान भुलावल ना जा सकेला । इहाँ का हिन्दी-भोजपुरी में कविता, कहानी, निबंध आदि के मूर्धन्य रचनाकार का अलावे भोजपुरी गजल के एगो सशक्त हस्ताक्षर बानीं । साँच कहल जाव त आधुनिक भोजपुरी गजल के इहाँ का नेंव के ईंट बानीं । अपना बारे में उहाँ का अपने गजल के माध्यम से कहले बानीं-

''आईं सुनी हमरा गीत-कविता, गजल के आवाज ।
देखीं तनी हमरा कल्पना के अदा आ अंदाज ॥''

जगन्नाथ जी के अगर आधुनिक भोजपुरी गजल के आधार-स्तम्भ कहल जाव त कवनो अतिशयोक्ति ना होई । कवनो साहित्यकार खाति कविता, कहानी, निबंध लिखल त सामान्य बात बा, बाकिर कवनो विधा विशेष के शास्त्रीय विवेचन के क्रम में कलम चलावल सचमुच रचनाकार के असाधारण व्यक्तित्व के परिचायक होला । जगन्नाथ जी द्वारा अभियन्ता का भाँति 'गजल के शिल्प-विधान' किताब में गजल के विभिन्न अंगन शेर, मतला, मकता, मिसरा, रदीफ, काफ़िया, जमीन आदि के तकनीकी रूप से विश्लेषण कइल उनका अध्ययन आ रचनाशीलता के परिचायक बा । एतने ना, गजल के छंदन पर विचार करत गजल के मूल छंद, मिश्रित छंद, संपरिवर्तित छंद आदि के वर्णन का संगे उर्दू-फारसी आ हिन्दी-संस्कृत छंदन में साम्य दर्शावल कवनो साधारण काम नइखे । एगो उदाहरण से एह तथ्य के पुष्टि होला- हिन्दी-संस्कृत के हरिगीतिका छंद में 28 मात्रा होला, जेकरा अंत में लघु-गुरु मात्रा होला । उर्दू-फारसी के 'बहरे रजन मुसम्मन सालियो' में 28 मात्रा आ अंत में लघु-गुरु मात्रा रहेला । भोजपुरी गजल में एकर उदाहरण

www.bhojpurisahityangan.com

मिलेला । उदाहरण का रूप में जगन्नाथ जी के ई ग़ज़ल देखल जा सकेला-

'हम हँस सकीं ना रो सकीं,हम जी सकीं ना मर सकीं ।
तवनो प चाहत लोग, हम हरदम ग़ज़ल गावल करीं ।'

ग़ज़ल के विशेषता के वर्णन करत इहाँ का आपन ग़ज़ल-संग्रह 'लर मोतिन के' में कहले बानीं -'ग़ज़ल जेकरा नाँवे में मिसरी मतिन मिठास, गुलाब जइसन गमक बा,सुवास बा, उर्दू काव्य के सबसे मजगर रूप ह । आजु के जुग में जब छंदबद्ध कविता एक तरह से अलोपित हो रहलि बा, गजल के लोकप्रियता के ई आलम बा कि उर्दू के त बाते छोड़ीं, हिन्दी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि क्षेत्रीय भाषा में गजल छूटि के लिखा रहल बा ।'

इनकर दोसर किताब 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' में इनकर इतिहास-दृष्टि के दर्शन होला । एह में भोजपुरी ग़ज़ल के प्रथम आ द्वितीय चरण के उल्लेख करत तेग अली 'तेग', गुरु बनारसी, वेढब बनारसी से लेके अर्जुन सिंह 'अशांत', महेन्द्र शास्त्री, दिनेश भ्रमर आदि अनेक गजलकारन के चर्चा कइले बानीं । आधुनिक काल के भोजपुरी गजल के क्षेत्र में प्रतिनिधि गजलकारन के एगो लमहर सूची बा जवना में अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, पांडेय कपिल, रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, जौहर शाफियावादी, डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, अशोक द्विवेदी, आनंद सन्धिदूत, आसिफ रोहतासवी, कुलदीप नारायण 'झड़प', गणेश दत्त 'किरण', जवाहर लाल 'बेकस', नागेन्द्र प्रसाद सिंह, पांडेय आशुतोष, मधुर नज्मी, मुफलिस, मोती बी.ए., रमेश चन्द्र झा, सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश', सत्यनारायण, हरिकिशोर पांडेय, गुमनाम आदि गजलकारन का संगे अपनो गजल के विशेष रूप से चर्चा कइले बाड़ें । 'भोजपुरी ग़ज़ल के विकास-यात्रा' तेग अली 'तेग' के 'बदमाश दर्पण' से उनइसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक के ग़ज़ल-लेखन के इतिहास समेटे के सफल प्रयास बा ।

इनकर गजल-संग्रह 'लर मोतिन के' में ठेठ भोजपुरी शब्दन उघटा-पुरान (पृ.13), असुराह (पृ.-13), पनिगर (पृ.-13), रेखिया उठान (पृ.-13), कुकाठ (पृ.)-14), अउँजा-पथार (पृ.-15), पगुरी (पृ.-21), बाउर (पृ.-24), लूर-सहूर (पृ.-28), अकसरुआ (पृ.-28), मिसरी मतिन (पृ.-29), खुनुस (पृ.-30), झँवाइल (पृ.-36), ओरहन (पृ.-39), सुतार (पृ.-42), बेकहल (पृ.-47) आदि के प्रयोग भोजपुरी गजल के सौंदर्य में चार चाँद लगावेला ।

www.bhojpurisahityangan.com

इनका व्यक्तित्व के एगो आउर महत्वपूर्ण पहलू ह- इनकर संपादन कला । 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' के संपादन के बाद 'कविता' भोजपुरी कविता के पत्रिका के सफल संपादन इनका कृतित्व के विशिष्ट उपलब्धि बा । कवनो पत्रिका के सफल संपादन तब मानल जाला, जब स्तरीय रचनन का संगे ओकर नियमित प्रकाशन होत रहे । इनका संपादकत्व में 'कविता' पत्रिका के लगातार तेरह बरिस तक नियमित, नियत तिथि के, नियत आकार में स्तरीय रचनन के समेटत प्रकाशन कवनो साधारण काम नइखे । अपना बल-बूता पर जगन्नाथ जी के ई काम इनका जिनगी के एगो विशिष्ट उपलब्धि के रूप में गिनल जाई ।

अंत में भोजपुरी गजल के उहाँ का हिमालयी ऊँचाई प्रदान करे के कवनो कोर-कसर ना छोड़नी । एक गजलकार के रूप में उनकर भूमिका उनके शब्दन में देखीं-

'रहीं सजावत गजल के महफिल ।
इहे मिलल बा नसीब हमरा ।'

-बी-12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड,
जगदेव पथ, पटना-800014

❖❖❖

'सुर ना सधे' के प्रकाशन के श्रेय मित्रवर आ काव्य-गुरु श्री जगन्नाथ के बा । हमरा एह गजल-संग्रह के भूमिका लिख के उहाँका जवन आशीर्वाद दिहले बानी, ऊ हमरा जीवन-संघर्ष के पाथेय बनी ।

*-[नागेन्द्र प्रसाद सिंह, गजल-संग्रह **'सुर ना सधे'** के पहिला संस्करण के आत्मकथ्य में]*

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा आँखिन में

-मिथिलेश 'गहमरी'

'ग़ज़ल' के सरेह-सिवान में जब-जब भोजपुरी-ग़ज़ल के चर्चा होला, आदरणीय जगन्नाथ जी, हमके कबो 'वली दकनी' जइसन चिन्तनशील शायर नजर आवेलन, जे अपना जिनगी के अनुभव-अनुभूति से, कला कौशल से (रेख़्ता) उर्दू शायरी में नया लोच, नया रंग भरलन, जेकर धड़कन, उनुका जुग का साथे उनुका बाद के पीढ़ी के गजलन में साफ सुनल जा सकेला। कबो जगन्नाथ जी, (ख़ुदाये-सुख़न) 'मीर' लेखा लागेलन जे आपबीती के, जग बीती बनावत घोषणा कइलन -''मुझे गुफ़्तगू अवाम से है''। कबो, अपना बयान, लहजा, तहदारी खातिर मशहूर शायर 'ग़ालिब' जइसन लागेलन, जेकर साफ कहनाम बा कि- 'पत्थर दिल खातिर शायरी ना ह।' जेकरा लगे पिघिलत हृदय नइखे, ऊ शायरी के सौन्दर्य से खाली रहेला, दूर हो जाला-

''हुस्ने-फ़रोगे-शम्अ-ए-सुख़न दूर है 'असद'।
पहले दिले-गुदाख़्ता पैदा करे कोई।''

कबो जगन्नाथ जी, डॉ. इक़बाल के ऊँचाई छुवत देखाई पड़ेलन जे इंसान के तरफदारी करत कहलन- कि पूरा आलम में इंसान समा ना सके, जब कि इंसान में पूरा आलम (संसार, ब्रह्माण्ड) के जगह देहल जा सकेला-

''अन्का दर आलम, न गजंद आदम अस्त।
अन्का दर आदम, ब गजंद आलम अस्त।''

कबो, जगन्नाथ जी (तरक़्की पसन्द) प्रगतिशील बिचारधारा के एकबाला शायर फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' जइसन चमक बिखेरत, परम्परागत नींव पर काव्य-कला के प्रयोग करत नजर आवेलन, जे इंकलाबी लय के, रुमान के साँचा में ढाल के कहलन-

''अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?
और भी दुख है ज़माने में मुहब्बत के सिवा।''

कबो 'फ़िराक़ गोरखपुरी' जइसन-

''ख़याले-दैर नहीं, ख़ौफ़े- ख़ानकाह नहीं।
मैं जानता हूँ मुहब्बत कहीं गुनाह नहीं।''

'जगन्नाथ' जी अपना अंदाज में नेह-प्रेम, मुहब्बत, लाग-लगाव के

www.bhojpurisahityangan.com

महत्व-महत्ता के बतलावेलन, त कबो, अपना समय के राजनैतिक-सामाजिक यथार्थ (साँच) के नया भाव-भंगिमा का साथे परोसे वाला कवि दुष्यंत कुमार के छवि के (आभा के) पोषण करत नजर आवेलन, जे देश के दुर्दशा पर, गजलियत के बाना पहिरावत कहलन-

''कल नुमाइश में मिला था चीथड़े पहने हुए ।
मैंने पूछा नाम, तो बोला कि हिन्दुस्तान है ।''

हमरा एह कुल्हि बात के, कुछ लोग, हमार बड़ बोलापन (अंध-भक्ति), 'हाँकल' कहि सकेला, सुधी आलोचक-समालोचक के नजरिया-नजर, एह बांतन के काटि सकेले, बाकिर ऊपर के एह कवि/शायर लोग, जइसे अपना भाषा के 'ग़ज़ल' के माध्यम से सहेजे, सँवारे, चमकावे में आपन खून-पसीना एक कइले बा, ओही तरे जगन्नाथ जी 'ग़ज़ल' के स्वरूप में, ग़ज़ल के 'फार्म' में, ग़ज़ल के भाव-भूमि, सलीका-तरीका के साथे अपना मौलिक चिन्तन-मनन से, भोजपुरी ग़ज़ल के जवन प्रतिमान खड़ा कइले बानी, ओह भगीरथ-प्रयास के, केहू से कबो नकारल ना जा सके, ई हमार दावा बा । कवनो भाषा के (साहित्य होखे) ग़ज़ल होखे, जबले ओ 'भाषा के सांस्कृतिक, व्यावहारिक, सहज रूप, ग़ज़ल ग्रहण ना करी, तबले ग़ज़ल से प्रभावकारी गुण दूरं रही । कहे के मतलब ई बा, कि हिन्दुस्तानी ग़ज़लकार लोग, फ़ारसी ग़ज़ल के ज्यों-के-त्यों कबूल ना क के, गजल के अपना जमीन, जिनगी, अपना तहजीब, अपना परम्परा के साथे स्वीकार कइल । ओही तरे, भोजपुरी गजल के मतलब- जेकरा में, भोजपुरिया समाज के दिल-धड़कन, बोली-ठोली, रहन-सहन, परब-तेवहार, तिरिथ-बरत, उमंग-तरंग, सुख-दुख, लोक-लाज, नदी-पोखर, बाग-बगइचा, खेत-खरिहान, कथा-कहाउत, राग-रागिनी, चूल्हा-चउका, धरती-अकास, भोजपुरिया मन-मिजाज, ग़ज़ल के कलेवर में चमकत-दमकत, लखार होखे ।

जगन्नाथ जी भोजपुरी-गजल के सजावे-सँवारे, स्थापित करे में बोलचाल के भाषा के शब्दन के, सुघ्घर, साहित्यिक बनावे में अपना के खपा देले बानीं, जेकर नतीजा बा कि कवनो भाषा के (कविता, शायरी से) आज भाव-भाषा, कथ्य, शिल्प-सौष्ठव के दिसाईं 'भोजपुरी ग़ज़ल' हेठ नइखे । जगन्नाथ जी के गजलन में ऊ खूबी बा, जेके दुनिया के कवनो भाषा के ललित कला के सोझा राखि के भोजपुरी भाषा इतरा सकेले, गर्व महसूस कर सकेले । 'शैली' कहले बाड़न कि- जवना नग़मा (कविता, शायरी) में दर्द

www.bhojpurisahityangan.com

के नक्कासी नइखे, ओह कविता में (शायरी में) दिल के छुवे के तागत ना होला । जिनगी में जहर के एहसास जदी नइखे, त अमरित के सवाद के कवनो माने नइखे, एही से जगन्नाथ जी कहत बानी-

रउवा दीहीं दरद आ गजल देब हम ।
ई गजल, रउरा नाँवें बयाना भइल ॥

गाँव छोड़ि के, शहर में बसे का पाछा चाहे जवन कारण होखे, बाकिर शहर के आबो-हवा अइसन बिगड़ल बा, कि इंसान ख़ातिर ऊ आफते बा । पाकिस्तानी शायर 'अहमद फ़राज़' के अनुसार-

शहर वालों की मुहब्बत का मैं कायल हूँ, मगर ।
मैंने जिस हाथ को चूमा, वही ख़ंज़र निकला ॥

अपना भोजपुरिया लहजा में शहर-गाँव के एह दर्द के समेटत, जगन्नाथ जी के इशारा देखीं-

पता ना, बा बाँचल कि ना हमरा गाँवे ।
ई, राउर शहर ह, शराफत त होई ।

वक्त का साथे इंसानो बदल रहल बा, जेकरा से ओकरा में खूबी का सँगे ढेर खामिये आ गइल बा । मीर अब्बुदुलह ताबाँ के कहनाम बा, कि-

किसी से करिये मुख्वत न इस फ़साने में ।
कि, अब बुरा ही नतीजा है याँ ज़माने में ॥

'ग़ालिब' साहेब कहत बाड़न-

जब तवक़्क़ो ही उठ गई 'ग़ालिब' ।
क्यों किसी का गिला करे कोई ॥

बदलत समाज के चिन्ता, मशहूर शायर जान एलिया के ई कहे पर मजबूर करत बा, कि-

कौन इस घर की देख-भाल करे ।
रोज़ इक चीज़ टूट जाती है ॥

एही बदलाव, एही 'हरास' के महसूस करत, जगन्नाथ जी भोजपुरिया संवाद के गुण के साथे बड़ा मासूमियत से कह रहल बानीं-

केकरा बारे में हम कहीं, ना कहीं ।
वक्त ह ऽ, सब बदल गइल आखिर ॥

नेह (प्रेम) एह दुनिया के नायाब मोती ह, एकरा बिना इंसान के जिनगी, जइसे सावन बिना बदरी के, बिना रोशनी के जइसे सुरुज, बिना

www.bhojpurisahityangan.com

सुबास के जइसे फूल; दीया जइसे बिना बाती के, बाकिर सच्चा प्रेम उहे हऽ, जेकरा में पूर्ण समर्पण होखे । कबीरदास जी कहलन कि-

प्रेम न उपजे बाड़िया, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा-परजा जेहि रुचे, सीस देइ, ले जाय ॥

नज़ीर अकबराबादी, प्रेम के समर्पण- बलिदान के उकेरत चर्चा कइलन-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजे ।
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है ॥

भोजपुरी बिम्ब-विधान के बलबूते जगन्नाथ जी नेह-प्रेम के बिस्तार पर प्रकाश डालत, नेह के प्रभाव के स्थापना करत, अइसन सहज-सरल मनमोहक चित्र उकेरले बानीं, जे प्रेम के अमिट अनमोल 'मथेला' बन गइल बा-

''नेह के एगो झिंटकी रहे बस गिरल ।
मन के कुअँना में लहरे-लहर हो गइल ॥''

जदी, इंसान में समय के परिखे के सलाहियत बा, चीजन के सही ढँग से देखे के नजरिया बा, त इंसान दुख के पतझरो के, सुख के मधुमास बना लेवेला । मीर तकी 'मीर' एही से कहलन-

चश्म हो, तो आइनाखाना है, दहर
(आँख) (दर्पनगृह) (संसार)
मुँह नज़र आता है, दीवारों के बीच ॥

जगन्नाथ जी अपना एगो शे'र में कहले बानीं कि दुख सहेजे के लूर-सहूर होखे त जिनगी में आनन्द, उत्साह भरल जा सकेला, बाकिर ई हुनर सबका लगे ना होखे-

गिरल जात भुइयाँ बा आँखिन के लोर ।
कहाँ उनुका रोवे के बडुवे सहूर ॥

भोजपुरिया राग- बिहाग, रीति-रिवाज, हँसी-ठिठौली, कसक-पीर, रार-डाह, पास-फइलाव, हवा-पानी का साथे भोजपुरिया मनई के जिनगी आ जिनगी के दर्शन (जीवन-दर्शन) के चित्रण जगन्नाथ जी के गजलन में मौजूद बा, इहे कारण बा कि जगन्नाथ जी के शेर (ग़ज़ल) सुनेवाला के जुबान पर सहजे चढ़ि जाला, भोजपुरी ग़ज़ल अपना शुरुआते दौर से मन में उतरि जाला । कथ्य आ शिल्प के तईं, ई सजग रहल बिया । जगन्नाथ जी अपना

www.bhojpurisahityangan.com

जिनगी के अनुभव, भोगल क्षण, सपना-संघर्ष के, भोजपुरिया रंग-रूप, बोली-बानी, मुहावरा-कहाउत के संगे, भोजपुरिया प्रस्तुत-अप्रस्तुत विधान का साथे, साहित्य के मँजल-सजल प्रचलित बह्रन (लय खण्ड; के साँचा में, भोजपुरी ग़ज़ल के ढारि के साँच के, ग़ज़ल के गरिमा बढ़ावत, भोजपुरी साहित्य के समृद्ध कइले बानी, 'जगन्नाथ' जी के एह मणिकांचन योगदान के, भुलाइल ना जा सके ।

परम्परा के सहेजत, आधुनिकता, समकालीनता से नजर मिलावत, जगन्नाथ जी के कुछ शेर, (जेकरा पर खुला दिल से नाज कइल जा सकेला, जेके पढ़ला, सुनला के बाद दिल-दिमाग कुछ सोचे-समझे प अनयासे मजबूर हो जाला)-

1. लोर हऽ आँखि के पानी, गिरे ना चेत रहे ।
   लोर का जोर से पनिगर परान हो जाला ॥
2. रउरा आँखिन में भर गइल पानी ।
   हमरा आँखिन में भर गइल पानी ॥
3. रात कहवाँ कटी, कतहूँ ना बसेरा बाटे ।
   ई, त चिरइन के सँगे रोज के फेरा बाटे ॥
4. प्रीत के आग जे बरलीं, त अँगेजी हँसि के ।
   लोर के धार बहवला से लहक ना जाई ॥
5. नेह मँगलीं त लोग हँसि के कहल ।
   आजु कइसन कंगाल आइल बा ॥
6. जन्म से लेके अबले पाकि रहल ।
   जिन्दगी अब ना काँच-सेवर बा ॥
7. अँजोरा जरत बा, अन्हारा बुताता ।
   दिया के दियानत-सियासत त देखीं ॥
8. रोज एही तरे त गरजेले ।
   गाँव के राति हऽ, चिहाईं जनि ॥

एह शे'रन के सहजता, सरलता, विनम्रता, गम्भीरता, कहे के तरीका-सलीका, रंग-ढंग, भाव-भंगिमा, जदी केहू से, (कवनो दोसर भाषा के कविता से) सेसर नइखे, त' कमतरो नइखे । 87 बरिस के उमिर में जगन्नाथ जी जब लिखत बानीं कि-

www.bhojpurisahityangan.com

बयरिया के भाषा, दियरिये नू बूझी ।
लहरिया के मनसा, अररिये नू बूझी ॥
उजाला के आँतर में, का-का भरल बा ।
ई, अउरी के बूझी, अन्हरिये नू बूझी ॥

त, फिर से मीर तकी 'मीर' इयाद आ जालन- जे अपना समय के आलोचक लोग के ऐना देखावत, रचनाकार के अमरता का ओर इंगित करत, कहलन-

जाने का नहीं शोर, सुख़न का मेरे हरगिज ।
ता हश्र; जहाँ में मेरा दीवान रहेगा ॥

दुनिया के चमक-दमक से दूर रहेवाला अपना नेह से, केहू के छनभर में आपन बनावे वाला (कथा, कहानी, नाटक, समीक्षा, गीत, ग़ज़ल के, 'कविता' के सम्पादन-सृजन के अमर सहजोग से) भोजपुरी भाषा के मान-मर्यादा बढ़ावे वाला गुनी-मुनी रचनाकार जगन्नाथ जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर, 'परास' पत्रिका के विशेषांक निकाले खातिर सम्मानित सम्पादक डॉ. आसिफ रोहतासवी जी के, अतिथि सम्पादक भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के, एह मिथिलेश 'गहमरी' का ओर से बहुत-बहुत बधाई, शत्-शत् नमन् ! भइया- "यह ज़ोरे-कलम और ज्यादा....।"

-गहमर, गाजीपुर (उ.प्र.) - 232327
मो० : 9451936687

❖❖❖

भोजपुरी के स्थापित गजलगो अनुजवत स्नेह भाजन भाई जगन्नाथ जी आ भाषा साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् अग्रजवत् आदरणीय आचार्य विश्वनाथ सिंह के उकसवला के चलते हमरा गजलन के दियरी बरत रहल बा ।

*-[पाण्डेय कपिल, गजल-संग्रह **'कह ना सकलीं'** के आमुख **'आपन बात'** में]*

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी गीत-ग़ज़ल के व्याकरण

-सतीश प्रसाद सिन्हा

भोजपुरी के विकास-यात्रा में शामिल दिग्गज सह-यात्रियन में एगो बड़ नाँव बड़ुए जगन्नाथ । भोजपुरी के लौकिक आ भाषिक संस्कार-संस्कृति के संरक्षण का साथे आधुनिकता आ प्रगतिशीलता के विविध रंग से सुशोभित करे के श्रेय भी आदरणीय जगन्नाथ जी के बेहिचक दिहल जा सकेला । अइसन ख्यातिनाम सख्सियत के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर एगो अल्पज्ञ के प्रकाश डाले के मतलब सुरुज के दीया देखावल । तवनो पर उनुकर भ्रातृत्व आ अनुज तुल्य जे प्यार-स्नेह हमरा मिलत आइल बा, ओह के बलबूते हम किछु कहे के हिम्मत कर सकत बानी ।

आदरणीय जगन्नाथ जी से हमार परिचय उनुकरे संरक्षण-संपादन में प्रकाशित होखे वाली त्रैमासिक भोजपुरी पत्रिका 'कविता' का जरिए भइल, जे आजु ले प्रगाढ़ अपनापन में बदलि के बरकरार बड़ुए । उनुकरे स्नेह सनाइल मार्गदर्शन आ प्रेरणा से हमरो ग़ज़ल का ओर रुचि जागल । 'कविता' अनेक नया-पुरान कवि-लेखकन के जोड़ के स्तरीयता का साथे निरन्तर कई साल तक भोजपुरी साहित्य के भंडार भरलस । आजु भले ऊ आदरणीय जगन्नाथ जी के बढ़त उम्र, अर्थाभाव भा अउर कवनो कारणवश बंद हो गइल, बाकिर भोजपुरी साहित्य के विकास में ओकर देन बेमिसाल आ ऐतिहासिक बड़ुए, एह में कवनो शक नइखे ।

आदरणीय जगन्नाथ जी के लेखकीय संसार बहुआयामी आ विस्तृत बड़ुए । उहाँ के गीतकार, ग़ज़लकार, कहानीकार, नाटककार, समीक्षक, संपादक आ निबंधकार के कई रूप में लेखन करत आ रहल बानी । भलहीं उनुकर झुकाव प्रारंभ से कहानी, एकांकी भा निबंध का ओरि रहल होखे, बाकिर सन् 1953-54 से ही हिन्दी कविता में उनुकर रुचि रहल बड़ुए आ बाद में त उहाँ के बेलकुल भोजपुरी के समर्पित हो गइलीं । 2009 में प्रकशित 'बाँचल-खुचल' कहानी-संग्रह में जगन्नाथ जी खुदे कहले बानी कि सन् 1966 ई. में जब नौकरी के दौरान मुगलसराय में पदस्थापित रहलीं त पहिल कहानी 'लछना' बनारस के पत्रिका 'भोजपुरी कहानियाँ' में छपि के खूब प्रशंसा आ शाबासी लुटलसि । ओह दौरान कई गो कहानी आ कई गो

www.bhojpurisahityangan.com

एकांकियो लिखइले सन आ छपबो कइले सन । 'बाँचल खुचल' का बाद 'सात रंग' एकांकी संग्रह 2010 में प्रकाशित भइल । ई दूनो कहानी आ एकांकी लिखइले सन पहिले जरूर, बाकिर छपि के किताब का रूप में अइले सन उनुकर कुल्हि काव्य आ शोधपरक पुस्तकन के प्रकाशन का बादे ।

पचास-साठ का दसक में आ ओकरा बादो के दसक के किछु काल खंड में गीत के जवन दौर चलत रहुए, ओह में छंद-मात्रा के माहिर जगन्नाथ जी के गीतन के खूब ख्याति आ प्रशंसा मिलल आ आजुओ ओह गीत-ग़ज़लन के कवनो जोड़ नइखे । उहाँ के गीत-संग्रह 'पाँख सतरंगी' सन् 1967 में छपि के आइल, जेकरा बेशुमार ख्याति आ वाहवाही मिलल । गीत का साथे ग़ज़लो का ओर जबर्दस्त चाव रहे । अपना गीत आ गजलन के सुर आ तरन्नुम में सजावे वाला एह गीतकार के गोष्ठियन आ महफिलन में श्रोता हाथे-हाथ लिहलन ।

जगन्नाथ जी के ग़जल-संग्रह 'लर मोतिन के' सन् 1977 में जब छपि के आइल, त ग़ज़ल के प्रेमी पाठक निहाल हो गइलन । शास्त्रीय मानक का खाँचा में ढलल एह संग्रह के हरेक शेर में दिल में उतर जाए के ताक़त आ सलाहियत बडुए । उहाँके 'ग़जल के शिल्प-विधान' (1997) के भूमिका में ख्यातिनाम ग़जलगो शमीम अहमद जी के कहनाम बडुए- "पिछला तीस-चालीस साल से कवि सम्मेलन आ गोष्ठियन के महफिल के अपना सुर से सजावे-सँवारे वाला एह शायर के पास अगर अपना गीतन आ ग़ज़लन के जरिए दिल में उतरे आ झिंझोरे के सलाहियत बा, त दोसरा ओर अपना लेखन से विचारधारा में नया हलचल आ मोड़ देवे के ताकतो बा । उनुकर रचना प्रकाशित होके बुद्धिजीवी वर्ग के आकर्षित करत रहल बा । जगन्नाथ जी भोजपुरी भाषा के उन्नति आ ओकर विकास खातिर बराबर सोचत आ काम करत रहेले....।" शमीम अहमद जी साफ़-साफ़ लफ़्ज में इहाँ तक ले कहलीं, 'ग़जल के शिल्प-विधान' अपना देश के साहित्यिक धरोहर आ जगन्नाथ जी के आत्मिक प्रेम के निशानी बडुए । एह में कवनो शक नइखे कि जगन्नाथ जी अपना गीत-ग़ज़ल से भोजपुरी के ना खाली समृद्ध कइलीं, बलुक भोजपुरी ग़ज़लन के आधुनिक तेवर का साथे हिन्दी-उर्दू के साथ कदमताल करे के सलीका भी सिखवलीं । 'ग़जल के शिल्प-विधान' का बाद उनुकर दोसरका एगो अइसन शोधपरक किताब 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' आइल, जेकरा जरिए ग़जल के बहुते आसान आ सरल तरीका

www.bhojpurisahityangan.com

से समुझल-बूझल जा सकेला ।

आदरणीय जगन्नाथ जी के दूनो शोध-परक किताब 'ग़ज़ल के शिल्प-विधान' आ 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी साहित्य के एगो नायाब तोहफ़ा बाड़ी सन । ई दूनो किताब ग़ज़ल रचनाकार, खास क के नवहा भोजपुरी रचनाकारन वास्ते 'गाइड' आ 'ग्रामर' के काम करी, एह में कवनो शक नइखे । आदरणीय जगन्नाथ जी के भोजपुरी के जवन बहुमूल्य अवदान रहल बड़ुए, ओह के कबो भुलाइल ना जा सके । कर्त्तव्यनिष्ठ, निष्कपट आ सादगी के प्रतिमूर्ति एह साहित्य मनीषी के विधाता स्वस्थ, सुखद आ लमहर जिनिगी देसु, इहे कामना बड़ुए ।

-'कुसुमांचल', कल्याण विहार, अम्बेदकर पथ,
बेली रोड, पटना-800014
मो० : 9234450686

❖❖❖

गजल

बात मन के कबो कहाइल ना
लाख चहलीं तबो गवाइल ना

देखि आपन हिया अघाइलं ना
देखि अनकर हिया हहाइल ना

जिन्दगी हार गइल मउवत से
कबो अइसन खबर सुनाइल ना

सोर बहुते बा उनका माया के
खैर, उनकर इहाँ बसाइल ना

गजल के गाँव में जाईं कइसे
रहे के लूर अबो आइल ना

-'लर मोतिन के', पृ.-45

www.bhojpurisahityangan.com

काव्याचार्य जगन्नाथ

-डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

भोजपुरी के वरिष्ठ कवि जगन्नाथ जी के 'भोजपुरी के गालिब' भी कहल जाला। गजल का आधुनिक काल के सुरुआते 'लर मोतिन के' का रचना-काल[1] 1971 से मानल जाला। जगन्नाथ जी के ई गजल-संग्रह का आइल, गजल-लेखन में अचानक तेजी आ गइल। एह काल के 'भोजपुरी गजल के स्वर्ण काल'[2] भी कहल जा सकता। कवियन में उत्साह त रहे, बाकिर गजल का छंद-विधान पर भोजपुरी का, हिंदियो में सामग्री के अभाव रहे, एहसे उहाँका 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' का सङ्हीं 'गजल के शिल्प-विधान' का रचना में भी प्रवृत्त भइलीं।

'गजल के शिल्प-विधान' के आचार्यत्व का ओर बढ़ रहल जगन्नाथ जी के एगो कदम कहल जा सकता। कहल गइल बा कि गुरु-शिष्य-परंपरा में जेकर शिष्य दस हजार हो जात रहन, ओकरे के आचार्य कहल जात रहे। बाकिर, एह शब्द के व्युत्पत्ति भी अपने आप में सुरुए से सार्थक रहे। "आङ् समन्तात् चरणीयम् आचरणं यस्य सः आचार्यः। माने जेकर आचरण हर प्रकार से अनुकरणीय होखे, ऊ आचार्य कहाला। ओह घरी बहुत कवि त गजल का छंद-विधान से अनभिज्ञ भी रहन आ एह तरह का पुस्तक के बहुत बेसब्री से खोज होत रहे। अधिकांश लोगन का भीतर कवित्व त रहे, बाकिर उनका दिमाग में फॉर्मेट के अभाव रहे। एहसे सब केहू अपना-अपना हिसाब से आपन जानकारी आ ज्ञान बढ़ाके एह क्षेत्र में लागल रहे। एकर रहल-सहल कोर-कसर एह पुस्तक से पूरा भइल। एह तरह से निस्संदेह कहल जा सकता कि जगन्नाथ जी के किताबि 'गजल के शिल्प-विधान' के समकालीन आ परवर्ती पीढ़ी भी खूब लाभ लिहलसि आ ले रहल बिया।

शिल्प-विधाान का प्रति उहाँ के सावधानी आ जागरूकता के एहसे भी समुझल जा सकता कि भोजपुरी का पहिल गजलकार तेग अली का गजलन में प्रयुक्त बहरन के शिल्प-सौंदर्य के चर्चा करत एक-एक बिंदु हिगरा के बतावतानी आ निर्दोष प्रयोग पर मोहर लगावतानी ।[3] फेरु त उहाँ के एगो अउरी किताबि आइलि- 'हिंदी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद'[4], जवन गजलकार भइला का सङहीं उहाँ के आचार्य का पद पर प्रतिष्ठित करे खातिर काफी बिया। एह पुस्तक में 64 गो समरूप छंद समाविष्ट बाड़ सन, जेकरा विवेचन में हिन्दी-उर्दू का छंदन में आश्चर्यजनक रूप से समानता लउकता। 'सँझवत'

www.bhojpurisahityangan.com

का प्रवेशांक के विमोचन करत खा उहाँके वक्तव्य में छंद का प्रति जवन दायित्व-बोध झलकत रहे[5], ऊ भावयित्री प्रतिभा के धनी एगो आचार्ये में मिल सकता, खाली कारयित्री प्रतिभा के कवनो रचनाकार में ना।

गजल के प्रति सचेष्टता का मूल में जगन्नाथ जी के गजल से बहुत अधिक लगाव बाटे। उहाँका लिखतानी कि "गजल, जेकरा नाँवे में मिसिरी मतिन मिठास बा, गुलाब अइसन गमक बा, सुबास बा, उर्दू काव्य के सबसे जनगर अ पनिगर रूप ह। आजु के जुग में जब छंद-बद्ध कविता एक तरह से अलोपित हो रहल बा, गजल के लोकप्रियता के ई आलम बा कि उर्दू के त बात छोड़ीं, हिंदी, भोजपुरी, मगही, मैथिली आ अउरी क्षेत्रीय भाषा में भी गजल छूटि के लिखा रहलि बा।"[6]

भलहीं गीत आ कविता पर भी जगन्नाथ जी के भरपूर पकड़ बा, बाकिर अइसन लागता कि उहाँ के जान गजले में बसेले। उर्दू साहित्य के विद्वान डॉ. शमीम अहमद के कहनाम बा कि "जगन्नाथ जी गजलन के बड़ा प्रेमी हवे। एह बात के अंदाज एक तरफ त उनका खूबसूरत लोकप्रिय गजलन से होला आ दोसरा तरफ उनका ओह विचारन में मिलेला, जे ऊ गजलन का बारे में लिखले बाड़े।... जगन्नाथ जी गजल के ओकरा असली रूप में देखेके चाहेले। गजल के छंद के गजल के हुस्न समझेले, जे ओकरा तासीर के बढ़ावेला, कम ना करे।"[7] जगन्नाथ जी गजल का तह में जाके ओकरा विषय पर भी आपन अभिमत देले बानी- "हँऽ, कुछ लोग बीच में एकरा के छंद-मुक्त कइल चाहल, बाकिर ओह लोग के साजिस सफल ना हों सकल। जइसे-जइसे समय बीत रहल बा, गजल का हुस्न में निखार पर निखार आवत जा रहल बा। आजु के गजल के सिङार आ रूप देखि के त चिहाहीं के परी। खाली इश्क आ हुस्न के चरचा-मात्र नइखे रहि गइलि गजल। सब तरह के भावन के समावेश एकरा में हो रहल बा।"[8]

जगन्नाथ जी गजल का लेखन में छंद का अनुशासन से तनिको दूर गइला के घोर बिरोधी हई। एह तरह से साफ लउकता कि जगन्नाथ जी गजल से बेपनाह मुहब्बत करेलीं आ दोसर ई कि उहाँका गजल के असली शकल में देख के खुश होखींले अउर गजल के छंद-मुक्त करे के गजल का खिलाफ बूझींले।[9] अपना किताबि 'गजल के शिल्प-विधान' में उहाँका एह किताब का लिखला के उद्देश्य भी बतवले बानी। ऊ उद्देश्य एक तरह से एगो काव्यशास्त्रीय आचार्य के चिंता का रूप में लउकता-

www.bhojpurisahityangan.com

"संप्रति भोजपुरी के हर गीतकार गीत का संगे-संगे गजल के भी अपना अभिव्यक्ति के माध्यम बना चुकल बा। मतलब कि गजल-लेखन एगो फैशन के रूप लेले बा आ एगो भारी भीड़ एह घरी गजल-रचना में संलग्न बा। नतीजतन, गजल लिखा त रहल बाड़ी सन बेशुमार संख्या में, बाकिर अधिसंख्य गजल ना त गजल का रूप के दीदार करा रहल बाड़ी सन, ना ओकरा मन-मिजाज के एहसास। अइसे एकर कारण कई गो बाड़े सन, बाकिर प्रमुख कारण बा- भोजपुरी में गजल के शिल्प आ संरचना से संबंधित सामग्री के नितांत अभाव। प्रस्तुत पुस्तक एह अभाव के दूर करे के एगो विनम्र प्रयास मात्र बा।"[10]

"बुनियादी तौर पर एह किताबि में गजल का छंदन के प्रस्तुति, उर्दू आ संस्कृत-हिंदी छंद-शास्त्र के रोशनी में कइल गइल बा। चूँकि उर्दू गजल में इस्तेमाल होखे वाला लगभग सब बहर ऊहे बा, जे आम उर्दू शायरी में प्रचलित बा, एह से एह किताबि में एक तरे से उर्दू शायरी के पूरा छंद-शास्त्र ही समाहित हो गइल बा। छंदन के साफ-सुथरा शब्दन में उदाहरण आ विस्तृत विवरण का माध्यम से एह तरे पेश कइल गइल बा कि पाठक का कवनो बात समझे में कवनो कठिनाई के सामना नइखे करे के पड़त।"[11]

रचनाकार जगन्नाथ के गजल का रस के चस्का सन् 1965 ई. में लागल आ तब से ई चस्का अबहीं ले चलल आ रहल बा आ साइत अब छूटहूँ का मान के नइखे।

मिलल कुछ एह तरह के रस नसा पिअते चढ़ल हमरा
भइल ई हाल अब खाली लिखत गावत गजल बानी।[12]

गजल लिखे से पहिले भलहीं उहाँका उर्दू गजलन के अधययन खूब कइले होखीं, बाकिर उहाँके रचनाकार का भाषा पर एकर कवनो प्रभाव नइखे लउकत। आजु जहाँ लोग भोजपुरियो में उर्दू के ढेर गैरजरूरी शब्दन के ठूँसि के अघात नइखन आ अपना उर्दू-ज्ञान पर इतराए से कवनो परहेज नइखन करत, जगन्नाथ जी अपना भोजपुरी के निछाँछ भोजपुरी रहे देले बानी। तनी कुछ शेरन के देखीं, मन भोजपुरी-भोजपुरी हो जाई-

दरद के दाह जब सुधि के सयान हो जाला
जिन्दगी से बहुत उघटा-पुरान हो जाला
लोर ह आँखि के पानी गिरे ना चेत रहे
लोर का जोर से पनिगर परान हो जाला

www.bhojpurisahityangan.com

रंग तनवें के ना मनवों के मनगरा जाला
रूप के धूप जब रेखिया-उठान हो जाला[13]

वर्तमान दशक में भी लगातार पोढ़ होत जात उहाँका गजल के भाषा में कुछ खास अंतर नइखे आइल। ऊहे उर्दू शब्द प्रयोग में लउकत बा, जवन भोजपुरी में रचि-बसि गइल बा।

समुंदर के शोखी नजर आ रहल बा
बढ़त गाँव तक अब शहर आ रहल बा

शहर खुद के सेहत सुधारत त बाटे
मगर भार सब गाँव पर आ रहल बा

डहर खुदहीं मंजिल का पँजरा ले जाई
चले के तरीका अगर आ रहल बा[14]

जगन्नाथ जी 'ग़ज़ल' आ 'गजल' शब्द के प्रयोग भी बड़ा सोचि-समझि के कइले बानी। 1997 में प्रकाशित काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'गजल के शिल्प-विधान' में जहाँ उहाँका हर जगह 'गजल' शब्द के प्रयोग करतानी, ओहिजे ओही साल प्रकाशित 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' में एको जगह 'गजल' के प्रयोग नइखीं कइले, हर जगह 'गजले' के प्रयोग मिलता। एहसे स्पष्ट होता कि उहाँका 'गजल' शब्द के प्रयोग खाली ओहिजे कइल पसंद करतानी, जहाँ ओकर शास्त्रीय विवेचन हो रहल बा, बाकिर सहज रूप में हर जगह 'गजल' शब्द के प्रयोग। 'लर मोतिन के' (1977) से लेके 'खुद के तलाशत' (2015) तक का अपना गजल-संग्रहन में जगन्नाथ जी खाली 'गजल' शब्द के प्रयोग कइले बानी, 'ग़ज़ल' शब्द के प्रयोग एको जगहा ना। एहसे बुझाता कि उहाँका गजल के तद्भव रूप के पक्षपाती बानी, काहेंसे कि अपना भोजपुरी समाज में ईहे रूप रचल-बसल बा।

गजल का सङहीं कविता आ गीत पर भी जगन्नाथ जी के कलम खूब चलल बिया। बलुक विश्वनाथ सिंह जी त इहाँ तक मानतानी कि जगन्नाथ जी मूल रूप से कवि आ ओहू में मुख्य रूप से गीतकार हईं। उहाँ का गीतकार रूप से सिंह जी अतना प्रभावित बानी कि गीत पर एगो नये स्थापना दे देतानी- "हमरा बुझाला कि गीत का अलावे अउर सब काव्यन के पाठ्य काव्य कहेके चाहीं।" सिंह जी अतना तक लिखतानी कि "हम जब

www.bhojpurisahityangan.com

कबो जगन्नाथ का गीतन के एकांत में पढ़ले बानी, गुनगुनाइल रोक नइखी सकल।''[15]

लोग मानेले कि भोजपुरी के बात होला त ओज, बीरता आ पौरुष का सङहीं कड़ेर आ रूखर सब्दन के बिंब भी मन में अनायास आ जाला। ई धारणा कम, भ्रम ढेर लागेला। जगन्नाथ जी के गीत एह तरह के भ्रम के दूर करे खातिर काफी बाड़े सन। उहाँका गीत में तनी चइत के भिनुसार देखल जाउ-

झलकि रहलि सोने के नइया माटी का अँगनइया
जागल मन के तार कि झुर-झुर बहल पवन पुरवइया
कलियन-कलियन निखरि रहल बा
अजगुत नवल निखार चइत के।
बिहँसि रहल भिनुसार चइत के ॥[16]

जगन्नाथ जी छंद के आग्रही हई। नई कविता प्रभाव से भी उहाँका मुक्त नइखीं। उहाँके अतुकांत कवितन के छंदमुक्त कविता का श्रेणी में ना राखल जा सके। ओहिजो अपना सहज प्रवाह 'मुक्त-छंद' मौजूद बा। एगो बानगी सामने बा-

ई बदरा
जे बरिसि रहल अँखियन से झर-झर
ना ह ऊ बदरा
अकास में जे घुमड़ेला
पकड़ि-पकड़ि के नदी-नार के राह
समुन्दर का आँतर में जे पइसेला।[17]

जगन्नाथ जी में छंद खातिर अगाध प्रेमे उहाँके काव्याचार्य तक का यात्रा में संबल रहल बा, जेकर सोरि उहाँका आरंभिक लेखन तक पहुँच जातिया। उहाँके पहिल कविता-संग्रह 'पाँख सतरंगी' में 'रुबाई' आ 'सॉनेट'[18] छंद में भी 'एक-एगो रचना प्रस्तुत कइल' ओही ओर इशारा कर रहल बा।

संदर्भ :-

1. जगन्नाथ, भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा, पृ.सं. 29, पुष्कर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पटना,1997
2. उपरिवत
3. जगन्नाथ, भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा, पृ.सं. 21, पुष्कर प्रकाशन,

www.bhojpurisahityangan.com

पटना, प्रथम संस्करण, 1997
4. पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1999
5. "उन्होंने कहा कि विभिन्न गद्य विधाओं के लिए विषय देकर और काव्य के क्षेत्र में विशिष्ट छंदों में लेखन कराकर नई पीढ़ी की ऊर्जा को भोजपुरी लेखन के लिए प्रेरित किया जा सकता है।"
-सँझवत (भोजपुरी पत्रिका, प्रधान संपादक, डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल), जुलाई-सितंबर, 2019, पृ.सं. 62
6. लर मोतिन के, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.सं.5
7. गजल के शिल्प-विधान, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1997, पृ.सं. 8
8. लर मोतिन के, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.सं. 7
9. डॉ. शमीम अहमद, गजल के शिल्प-विधान, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1997, पृ.सं. 8
10. गजल के शिल्प-विधान, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.सं. 11
11. डॉ. शमीम अहमद, गजल के शिल्प-विधान, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1997, पृ.सं. 9
12. लर मोतिन के, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.सं. 9
13. लर मोतिन के, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.सं. 13
14. खुद के तलाशत, भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान, पटना, प्रथम संस्करण, 2015, पृ.सं. 61
15. पाँख सतरंगी, जगन्नाथ, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1967, पृ. सं. 1
16. पाँख सतरंगी, जगन्नाथ, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1967, पृ. सं. 34
17. पाँख सतरंगी, जगन्नाथ, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1967, पृ. सं. 54
18. पाँख सतरंगी, जगन्नाथ, पुष्कर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1967, पृ. सं. 46 आ 56

❖❖❖

संपर्क : ई मेल- rmishravimal@gmail-com मोबाइल नं. 9831649817

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य के अमिट हस्ताक्षर कविवर जगन्नाथ

-रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

भोजपुरी साहित्य के गौरव कविवर जगन्नाथ जी के **जन्म 19 जनवरी, 1934** के बक्सर जिलान्तर्गत इटाढ़ी प्रखण्ड के कुकुढ़ा गाँव में भइल रहे । बचपने से इहाँ का कुशाग्र बुद्धि के रहलीं । छात्र-जीवन से ही इहाँ का काव्य के अलावे अन्य विधन में लेखन शुरू कर देले रहलीं । रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकन ('आज', सन्मार्ग वगैरह) में छपे लागल रहली स । इहाँ का दूरसंचार विभाग, भारत सरकार में आपन सेवा देबे लगलीं । अपना प्रतिभा के बल पर आगे बढ़त सहायक महा प्रबन्धक पद से अवकाश ग्रहण कइलीं । 1955 के बाद जगन्नाथ जी के सृजनशीलता में रुझान बढ़ल । पहिले इहाँ का हिन्दी में लिखत रहली, बाकिर बाद में भोजपुरी का ओर विशेष रुचि जागल । आज तक इहाँ का तन-मन-धन से भोजपुरी-साहित्य-सेवा में लागल बानीं ।

जगन्नाथ जी विविध विधन के रचनाकार हईं । गीत, ग़ज़ल, निबन्ध, समीक्षा, कहानी, नाटक वगैरह इहाँ का खूब लिखलीं । पत्र-पत्रिकन में छपलीं आ सराहल गइलीं । प्रशंसित स्तरीय साहित्यकारन में इहाँ का पहिला पाँती में रहल बानीं । काव्य-गोष्ठियन में इहाँ के मार्मिक सस्वर मधुर गीत सुनके श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाले ।

कविवर जगन्नाथ मूलतः कवि हईं, बाकिर कई अन्य विधन में भी इहाँ के योगदान प्रशंसनीय बा । इहाँ का प्रतिष्ठित कहानीकारे ना, एगो उत्कृष्ट नाटककार भी हईं । इहाँ का एगो कुशल समीक्षके ना, एगो विद्वान छन्दशास्त्री भी हईं । ग़ज़लन के शिल्प पर भोजपुरी में केहू अतना दमगर काम नइखे कर पवले । 'ग़ज़ल के शिल्प-विधान' इहाँ के मूल्यवान कृति बा । साहित्यकार वर्ग में एह पुस्तक के खूब सराहना मिलल । एकरा के लोग ध्यान से पढ़ल, लिखे के गुर सीखल आ आज भी सीखता । ग़ज़ल लिखनिहार लोग इहाँ से अपना ग़ज़लन के संशोधित-परिमार्जित करावत रहल बाड़े । इहाँ के सलाहियत से ग़ज़ल में शिल्पगत आ भावगत ऊँचाई आ जाले । ई काम जगन्नाथ जी बेलाग-लपेट के करींला । ग़ज़ल के शास्त्रीयता पर आधारित

www.bhojpurisahityangan.com

ग़ज़ल के शिल्प-विधान (1997) का अलावे ग़ज़ल पर इहाँ के आउर शोधात्मक किताब अइली स । ग़ज़ल के विकास-क्रम पर आधृत इहाँ के पुस्तक 'भोजपुरी ग़ज़ल के विकास-यात्रा' 1997 में ही प्रकाशित भइल । एक साल बाद 1999 में इहाँ के एगो अउर छन्द पर पुस्तक प्रकाशित भइल 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के सभरूप छन्द' । एकरा में हिन्दी, उर्दू आ भोजपुरी के छन्दन में समानता के तार्किक ढंग से विवेचन-विश्लेषण उदाहरण सहित कइल गइल बा । जगन्नाथ जी के जवना दूगो बहुमूल्य किताबन 'भोजपुरी मुहावरा कोश' आ 'छन्दशास्त्र' के प्रकाशन अबहीं नइखे हो पावल, शोधपरक बाड़ी स ।

जगन्नाथ जी कविता के मानवीय संवेदना के लयात्मक अभिव्यक्ति मानीला । लिखला से कवि का सकून मिलेला आ रचनन में जीवन के विविध पक्षन से जुड़े के प्रयास होला । कवनो खास पक्ष के लेके इहाँ में आग्रह ना रहल । प्राकृतिक जीवन्त छटा से भरपूर आ विरह के छँवक में सुनल, इहाँ के गीतन के पहिला संग्रह 'पाँख सतरंगी' 1967 में प्रकाशित भइल आ मील के पत्थर साबित भइल । एह संग्रह के खूबे पसन्द कइल गइल । ग्रामीण परिवेश में चित्रित गीत गाँवन में बहुते चर्चित भइलन स आ लोगन के जुबान पर चढ़ल रहले स ।

गीत-संग्रह 'पाँख सतरंगी' के बाद जगन्नाथ जी का ग़ज़लन के संग्रह 'लर मोतिन के' 1977 में आइल । ग़ज़ल के ई संग्रह भोजपुरी हलका में तहलका मचा दिहलस । ई बेमिसाल संकलन भाव-भाषा-शिल्प में बेजोड़ रहल । सैंतिस बरिस बाद 2015 में ग़ज़ल-संग्रह 'खुद के तलाशत' प्रकाश में आइल । एह मँजल ग़ज़ल-संग्रह में मुहावरा-लोकोक्तियन के प्रयोग बड़ा सफाई, सुघराई आ कुशलता से भइल बा । जिन्दगी के जद्दोजहद जगन्नाथ जी का ग़ज़लन के मूल भाव बा । इहाँ के पानी पर आधृत मुहावरा से सनल एगो ग़ज़ल त कमाल के बा । ई ग़ज़ल खूबे चर्चित आ प्रशंसित बा । एह ग़ज़ल के सातो शेर मुहवरायुक्त बाड़े स । एकाध गो शेर देखीं-

''जिन्दगी का निशा चढ़ल बाटे ।
उम्र के बा उतर गइल पानी ॥
खुद के ऐनक में देखके लागल ।
जइसे घइलन बा पर गइल पानी ॥''

लिखनिहार भाई लोग के जगन्नाथ जी साफ-सुथरा शब्दन में सलाह

www.bhojpurisahityangan.com

देबे से भी नइखीं चूकत-

''शब्द के कुछ अर्थ दीं, औकात दीं ।
शायरी में वक्त के कुछ बात दीं ॥''

जगन्नाथ जी ई मानीला कि ग़ज़ल नाजुक विधा हवे-मिजाज आ बनावट में । एकरा अन्तरंग आ बहिरंग दूनो का सुन्नर-सुभेख होखे के चाहीं । कवनो एगो दब परी त ग़ज़ल बेदम होके रह जाई । जगन्नाथ जी अपना हर ग़ज़ल में एह विशिष्टता के सफल, सराहनीय निर्वाह कइले बानी । उक्ति वैचित्र्थ इहाँ का ग़ज़लन के खासियत बा । प्रांजल भाषा, भाव के ऊँचाई आ शिल्पगत अनुशासन देखे के होखे त जगन्नाथ जी में सब कुछ बा । भोजपुरी ग़ज़ल के साहित्य जगन्नाथ जी के बिना अधूरा बा । एगो ग़ज़ल में आपन अनुभव साझा करत लब्धप्रतिष्ठित कवि के कहनाम बा-

समय के, शहर-गाँव के, सब के पढ़लीं ।
बुझाइल जे पढ़के उहे हम त लिखलीं ॥

जगन्नाथ जी नामी-गिरामी उच्च स्तरीय कवि के साथ-साथ एगो कुशल-प्रतिष्ठित सम्पादक भी बानीं । इहाँ के सम्पादन में ग़ज़ल के एगो दमदार संग्रह 'भोजपुरी के प्रतिनिधि ग़ज़ल' 1978 में प्रकाशित भइल । 2003 में इहाँ आ भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के द्वय सम्पादन में ग़ज़ल के दुसरका संग्रह 'समय के राग' निकलल, जवना में सोलह चर्चित रचनाकारन के विवेचना के साथ 151 ग़ज़लन के समावेश बा । ई संग्रह बहुते प्रशंसित बा । अतंने ना सेवा-निवृत्ति के बाद इहाँ का 'साहित्य प्रतिष्ठान' के स्थापना कइलीं आ कविता पर आधारित मानक पत्रिका 'कविता' (त्रैमासिक) के सम्पादन-प्रकाशन 1999 से 2012 तक तन-मन-धन से लगातार करत अइलीं । काव्य के सृजनात्मक ऊँचाई देबे में एह स्तरीय पत्रिका के बहुत बड़ अवदान बा । एकर सब अंक ऐतिहासिक आ संग्रहणीय बाड़े स ।

सशक्त मधुर गीतकार, मँजल गजलकार, चर्चित छन्दशास्त्री, कुशल सम्पादक, सचेष्ट समीक्षक त जगन्नाथ जी बड़ले बानीं । एकरा अलावे भी साहित्यिक विधन के कई सुगंधित फूल इहाँ के सृजन-बाग में खिलल बाड़े स । 2009 में इहाँ के कहानी-संग्रह 'बाँचल-खुचल' प्रकाशित भइल । सब कहानी 'भोजपुरी कहानियाँ (वाराणसी) अइसन पत्रिकन में छप चुकल रहली स आ काफी प्रशंसित भइल रहली स । इहाँ के कहानियन में ग्रामीण-शहरी परिवेश के साथ आदर्शोन्मुख संवेदना के मिठास बा । एह संग्रह के कहानी

www.bhojpurisahityangan.com

कथ्य आ शिल्प का दृष्टि से बेजोड़ बाड़ी स । कहानी साहित्य में एहन के महत्व नकारल ना जा सके ।

जगन्नाथ जी एगो नाटककार रूप में भी चर्चा में रहल बानीं । 2010 में इहाँ के एकांकी नाटकन के संकलन सोझा आइल 'सात रंग' । शिल्प आ संप्रेषणीयता के दृष्टि से एकांकी असरदार आ अभिनेयता के गुण से लवरेजे बाड़े स ।

कविवर जगन्नाथ के सृजनात्मकता में कई रंग, रूप, रस आ गंध के सराहनीय समावेश बा । इहाँ के व्यक्तित्व प्रखर आ निराला बा । भोजपुरी साहित्य में इहाँ के अमूल्य योगदान बा । उत्कृष्ट साहित्यकारन के शीर्ष पंक्ति में जगन्नाथ जी साफ नजर आवतानीं । इहाँ का भोजपुरी साहित्य के एगो अमिट हस्ताक्षर बानी । इहाँ के सृजनात्मक अनमोल अवदान कबो भुलाइल ना जा सके । ईश्वर इहाँ के स्वस्थ-सानन्द राखीं, इहे हार्दिक कामना बा । आखिर में हम अतने कहब कि-

''रउवा दूसे ना पाइब' जगन्नाथ' के ।
ठीक से आके रउवा अगर देख लीं ।''

-(खुद के तलाशत)

-शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बाजार के पश्चिम,
बक्सर-802101 (बिहार)

❖❖❖

सहोदर भाई जगन्नाथ जी से गजल पर बेर-बागर चर्चा होत रहल बा । उहाँके स्नेहाशीष आ सूझ-बूझ के लाभ हमरा हमेशा मिलत रहल बा । हम एकर जन्मजात हकदारो बानी ।

-[रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष', गजल-संग्रह 'गुमसाइल हवा' के 'आपन बात' में]

www.bhojpurisahityangan.com



जिनिगी के सुर में ग़ज़ल के सुर



[जगन्नाथ से दिलीप कुमार के बातचीत]

सवाल : ग़ज़ल के शुरुआत अपने कहाँ से मानतानीं ? आ काहे ?.

जबाब : ग़ज़ल अरबी शब्द ह, एह से सामान्यत: ई भरम रहेला कि गजल अरबी का कोखी से जनमल होई, बाकिर अरबी में गजल नाम के कवनो काव्य-प्रकार नइखे । अरबी काव्य में प्रेम-भावना के निरूपण भइल बा, कसीदा के प्रारंभिक अंश 'तरबीब' भा 'नसीब' के माध्यम से, ग़ज़ल के माध्यम से ना । एह में कवनो शक नइखे कि कसीदा के एह प्रारंभिक अंश आ फारसी गजल में रूप-साम्य बा, बाकिर 'तरबीब' आ 'नसीब' नज़्म के एगो रूप ह आ स्वभाव भा प्रकृति का दृष्टि से ग़ज़ल आ 'तरबीब' भा 'नसीब' में भारी अन्तर बा ।

ग़ज़ल के जनम दसवीं शताब्दी में फारसी में भइल । फारस में रोदकी नाम के एगो कवि रहलन, जे स्थायी काव्य-प्रकार के रूप में गजल के शुरुआत कइलन ।

सवाल : भोजपुरी गजल के शुरूआत केकरा से मानल जाय के चाहीं ?

जबाब : भोजपुरी गजल के शुरुआत तेगअली 'तेग' से मानल जाय के चाहीं । तेगअली 'तेग' का पहिले भोजपुरी भाषा में अउरी कवनो गजलकार के नाँव नइखे मिलत ।

सवाल : वर्तमान समय 'नई कविता' के बा, मुक्तछंद के रचना के बा । ई गजल विधा खातिर खतरा हो सकत बा । रउआ कइसन महसूस करतानी ?

जबाब : 'नई कविता' आ मुक्तछंद से गजल का कवनो खतरा नइखे, दिलीप जी ! हिन्दी गजल के नामी कवि दुष्यंत कुमार त 'नई कविता' के स्थापित कवि रहलन । 'नई कविता' से ही ऊ गजल-लेखन में उतरलन आ हिन्दी गजल के सिरमौर बन

www.bhojpurisahityangan.com

गइलन । अइसे, गजल पर 'नई कविता' आ मुक्तछंद वाला लोग के भृकुटी टेढ़ रहेला, जेकर कवनो खास असर कबो ना लउकल । गंजल-लेखन निर्बाध गति से आगे बढ़त गइल ।

सवाल : वैश्वीकरण के एह दौर में साहित्य के लोकप्रिय विधा गजल कहवाँ ले प्रभावित होई ?

जबाब : गजल में कवनो खास परिवर्तन के आसार नइखे जनात । हँ, कथ्य के स्तर पर कुछ बदलाव अपेक्षित हो सकेला ।

सवाल : का गजल-लेखन खातिर रोजगारपरक शिक्षा बाधक माहौल तैयार कर रहल बा ?

जबाब : दिलीप जी, रोजगारपरक शिक्षा के प्रति लोगन के रुझान के साहित्य-लेखन खातिर माहौल तइयार करे के आसार बा । गजलो एह से अछूता नइखे, त एह सम्बन्ध में हम अतने कहब कि गजल होखे भा अउरी कवनो साहित्यिक-सृजन, भीतर के प्रेरणा से निःसृत होले । कतना डॉक्टर, इंजीनियर, आइ.ए.एस. आ अन्य कोटि के प्रशासनिक अधिकारी साहित्य-सृजन में संलग्न बाड़न । बहुत लोग गजल से भी जुड़ल बाड़न । कतना पढ़ल-लिखल किसान आ कम पढ़ल लोग भी कविता / गजल से जुड़ल बाड़न । हमरा समझ से रोजगारपरक शिक्षा से साहित्य-लेखन पर कवनो खास असर परेवाला नइखे । साहित्य-सृजन के उद्देश्य नोकरी-चाकरी भा अर्थ-प्राप्ति ना होखे ।

सवाल : गजल में कथ्य आ शिल्प में का कवनो तालमेल होला ?

जबाब : कथ्य के प्रकृति आ भंगिमा के अनुरूप छन्द आ समुचित छन्द-चयन, उत्तम रचना खातिर अपेक्षित होला ।

सवाल : आज के भोजपुरी गजलन में शिल्प के केतना अनुपालन हो रहल बा ?

जबाब : मोटामोटी 60 से 70 प्रतिशत तक रचनाकार शिल्प के प्रति सजग बाड़न आ ओह लोग से शिल्प के सम्यक अनुपालन हो रहल बा। एह में ऊ लोग शामिल नइखन, जे लोग नौसिखुआ स्टेज में बा ।

सवाल : भोजपुरी गजलन में कथ्य आ शिल्प के दिसाईं पुरनकी आ नइकी पीढ़ी के सोंच में का अंतर महसूस करतानीं ?

जबाब : अन्तर त बड़ले बा । पुरनकी पीढ़ी के लोग अन्तर्मुखी होत रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

एह लोग के ज्यादातर रचना रिवायती होत रहे, जबकि आजकल के शायर बाहर से भीतर लेता, तब ओकरा के आपन लयात्मक अभिव्यक्ति देता । एहसे आजकल के रचना ज़िन्दगी के ढेर करीब लागता । साँच पूछीं, त ज़िन्दगी गजलकार से कबो जुदा नइखे हो पावत ।

सवाल : उर्दू आ हिन्दी गजल के समानांतर भोजपुरी गजल के का स्थिति बा ?

जबाब : यदि बात के छिपावल ना जाव, त भोजपुरी-गजल अबहियों उर्दू आ हिन्दी-गजल के अनुसरण कर रहल बिआ ।

सवाल : भोजपुरी गजल के विकास में महत्वपूर्ण मोड़ रउआ कब-कब मानतानीं ?

जबाब : भोजपुरी गजल में हमरा अनुसार एके गो मोड़ आइल बा, ऊ ह हिन्दी में दुष्यंत कुमार के अवतरण । उनका आगमन से गजल के गुणवत्ता में बदलाव आइल । जवन गजल रिवायत में अझुराइल रहे, ओकरा में बदलाव आइल ।

सवाल : गजल में पारंपरिक बहरन के अनुपालन के अनिवार्यता के बारे में राउर का विचार बा ?

जबाब : गजल में पारम्परिक बहरन के अनुपालन त होखहीं के चाहीं, ना त गजल लूल्ह, लांगड़ आ अपाहिज हो जाई । छांदिक शिल्प के कार्य मंदिर के निर्माण नियंन बा । बिना बहरन के इस्तेमाल के गजल के परिकल्पना कइल बेमानी होई । कथ्य के ऊँचाई शिल्प से ही आपन आकार-प्रकार पावेले । एह से रचना के बढ़िया होखे खातिर बहरन के प्रयोग जरूरी बा ।

सवाल : गजल में 'दीवान' से का मतलब होला ?

जबाब : देखीं, हमरा जानकारी में निखालिस गजलन के संग्रह 'दीवान' कहाला ।

सवाल : भोजपुरी गजल के वर्तमान आ भविष्य कइसन बा ?

जबाब : वर्तमान त ठीके बा । भविष्यो एकर उज्ज्वल जनाता । भोजपुरी में नइकी पीढ़ी के नाँव से कवनो गजलकार उभरत नइखन, ई चिन्ता के विषय बा । गजल त आजो बा आ काल्हो रही, लेकिन नइकी पीढ़ी के ना बनला का कारन भविष्य त चिन्ताजनक बड़ले

www.bhojpurisahityangan.com

बा ।

सवाल : वर्तमान भोजपुरी-गजलकारन में कुछ अइसन नाँव बतावल जाय, जेकर अवदान रेखांकित करे लायक बा आ काहे ?

जबाब : आसिफ रोहतासवी आ भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' (बक्सर), तंग इनायतपुरी (छपरा), जौहर शाफियाबादी (गोपालगंज), मिथिलेश गहमरी (गाजीपुर) आदि गजलकार जीवन-यथार्थ से जुड़ल बाड़न । एह लोग में जिन्दगी के सुर में गजल के सुर मिलावे के भरपूर दम-खम बा ।

सवाल : काव्यरूप गजल के लेके वर्तमान भोजपुरी गजलकारन से अपने का कहल चाहब ?

जबाब : बस, अतने कि साधना के निरंतरता बनवले राखेके होई । साधना-स्नात कलम ही आला दर्जा के गजल दे सकेला ।

❖❖❖

गजल

अदा जिन्दगी के, नफासत, नज़ाकत
उमर थक गइल बा सम्हारत-सम्हारत

समय का शराफत के दूसीं ना अइसे
कहीं, का इ कम बा कि बानी सलामत

कदर का रहल घर में केकर आ कतना
हकीकत जो खुल जा, त होई हँसारत

मिलल मान ना मुट्ठियो भर कतहुँओ
पसर के पसर मिल रहल बा हिकारत

कहल कुछ कतहुँओ भइल बाटे मुश्किल
बाब हर बात में लोग सूँघत सियासत

-'खुद के तलाशत', पृ.-39

www.bhojpurisahityangan.com

गजल : जगन्नाथ



गीत महफिल में हमरा सुनाना त बा
राज आँतर के सबके बताना त बा.

रउवा सोचीं, सफाई में का-का कहब
हमरा पासे उमिर के बहाना त बा.

प्यार-दुत्कार जे भी मिले, ना मिले
रउवा बानी, बहुत बा, ठेकाना त बा.

ना लगाईं मुखौटा त का हम करीं
लोग का सामने मुँह देखाना त बा.

हम ना कहितीं गजल एह उमिर में, मगर
खुद के एह दौर में आजमाना त बा.

(-'खुद के तलाशत' से, पृ.-28)



www.bhojpurisahityangan.com

गजल : जगन्नाथ

तीन

दरद के दाह जब सुधि के सयान हो जाला
जिन्दगी से बहुत उघटा-पुरान हो जाला.

नेह सूरज ह, आसमान आँखि के पुतरी
छने में साँझ, छने में बिहान हो जाला.

फूल का काँट के गड़ला के पीर कम होला
ढेर असुराह घाव के निसान हो जाला.

लोर ह आँखि के पानी गिरे ना चेत रहे
लोर का जोर से पनिगर परान हो जाला.

रंग तनवे के ना, मनवो के मनगरा जाला
रूप के धूप जब रेखिया-उठान हो जाला.

भुला के गीत कबो नेह के कढ़ा दींला
बात तनिकी, मगर मुदई जहान हो जाला.

(-'लर मोतिन के', पृ.-13)

❖❖❖

'तेनुघाट साहित्य परिषद्' का ओर से स्वत्वाधिकारी डॉ. इन्द्रनारायण सिंह द्वारा तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी, तेनुघाट-1, जिला- बोकारो (झारखण्ड) से प्रकाशित आ जे.एम. कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-3 में अक्षरांकित आ शिवा इन्टरप्राईजेज प्रेस, पटना-6 द्वारा मुद्रित ।